CHRAK CHARCHA G.K.V.

अंक : 6 वर्ष : 4 जनवरी 1980

प्रधान सम्पादक : कविराज वेणीप्रसाद शास्त्री एम० ए०
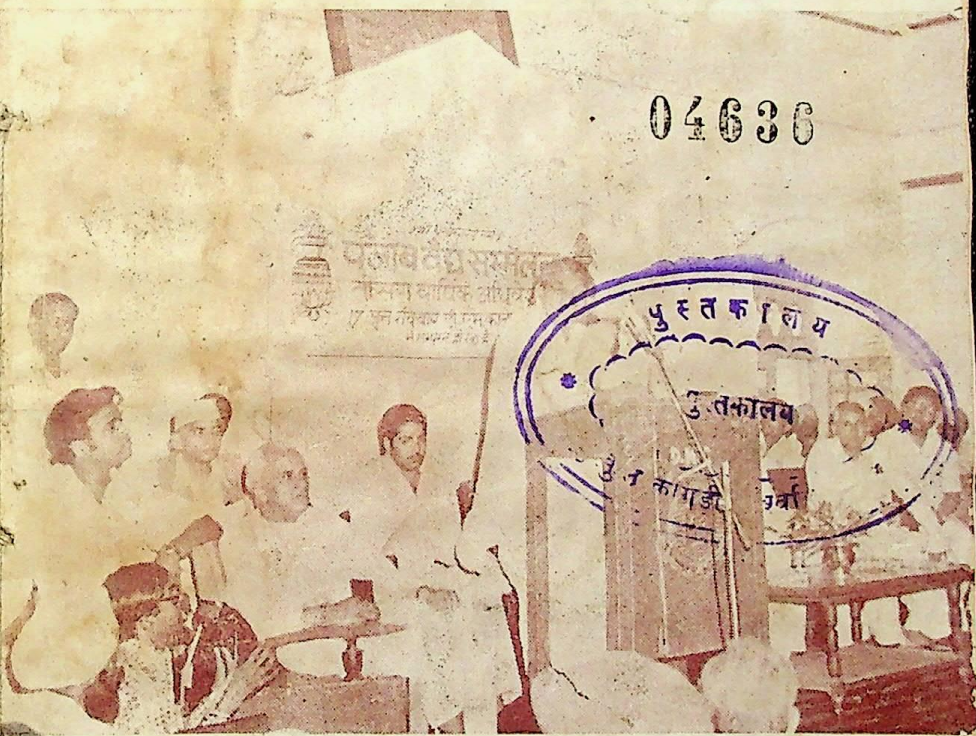
- पंजाब वैद्य सम्मेलन के तृतीय वार्षिक अधिवेशन का मोगा में उद्घाटन करते हुए तत्कालीन केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री श्री रवि राय जी (मध्य में)
- श्री बी० आर० बजाज I. A. S., श्री तीर्थराम जी वैद्य स्वागताध्यक्ष, कविराज श्री वेणी प्रसाद शास्त्री महामन्त्री (दाएं से)
- श्री रूप लाल जी साथी M. L. A., श्री [illegible]नाथ जी शास्त्री डिप्टी डायरेक्टर आयुर्वेद (बाएं से)

चरक चर्चा

ਚਰਕ ਚਰਚਾ

पंजाब वैद्य सम्मेलन का साहित्य एवं विज्ञानपक्ष

आयुर्वेदिक चिकित्सा

की

मासिक पत्रिका

मूल्य : 10 रु० वार्षिक

सम्पादक :

कविराज श्री वेणी प्रसाद शास्त्री (M.A.)

कर्ताराम स्ट्रीट, लुधियाना

कटुतिक्तकषाय

सम्पादक की कलम से

○

रेंग चैंग

मनुष्य परिस्थितियों का दास है। जो लोग अपनी सामर्थ्य से परिस्थितियों को बदल देते हैं, वह महापुरुष होते हैं। परन्तु मैं तो बहुत छोटा सा आदमी हूं, इमानदारी से चाहने पर भी "चरक चर्चा" प्रकाशित न हो सकी। पहिले तो वार्षिक अधिवेशन के निमित्त मन्त्रियों के चक्कर में चण्डीगढ़ और दिल्ली की प्रदक्षिणा करता रहा। दिन रात की भाग दौड़ पूरे 6 महीने हजम कर गई, परन्तु एक सन्तोष अवश्य रहा कि अन्ततोगत्वा मोगा अधिवेशन पूरी सजधज और सफलता पूर्वक सम्पन्न हो गया।

मोगा अधिवेशन की सम्पूर्ण गतिविधियों को संकलित कर 'चरक चर्चा' प्रकाशन की तैयारी शुरू कर दी गई है। साथ ही साथ यह चिन्ता भी रही कि भारत के स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मन्त्री श्री रविराय जी जो आश्वासन दे गए हैं, यदि भाग दौड़ करके उन्हें लागू न करवाया जा सका, तो सारे का सारा श्रम बेकार चला जाएगा, क्योंकि मन्त्रियों के आश्वासन कोई महाराजा दशरथ के वचन तो होते नहीं जो हर हाल में पूरे होने होते हैं। यह लोग तो कहकर तुरन्त भूल जाते हैं, जरा देर हो जाने पर तो यह पूरी की पूरी घटना को ही दिमाग से निकाल कर अजनवी बन जाते हैं। अतः निश्चय किया गया कि श्री रविराय जी को मिलकर प्रस्तावों को लागू करवाने का यत्न किया जाए और चरक चर्चा के संकलन का काम उसके बाद के लिए छोड़ दिया जाए।

अब शुरू हो गई अपनी दिल्ली की दौड़, लम्बा पत्र व्यवहार, रोज-रोज की टेलीफोन वार्ता एवं तीन लम्बी मुलाकातों के बाद बेल मंढे चढ़ती नजर आने लगी।

7-8-79 को फिर दिल्ली पहुंचा, घर पर ही श्री रविराय जी से मुलाकात हुई। अत्यन्त स्नेह और मैत्रीपूर्ण वातावरण में बात हुई। मैंने केवल दो मुद्दे सामने रखे जो वैद्य समाज के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। पहली अत्यन्त आवश्यक बात यह थी कि जो वैद्य अथवा हकीम अनुभव के आधार पर भारत के किसी भी राज्य में रजिस्टर्ड हैं उनके चिकित्सा विषयक अधिकार केवल उस राज्य की सीमाओं के भीतर ही मान्यता रखते हैं। यदि परिस्थितिवश उन्हें अपना राज्य छोड़कर दूसरे सूबे में जाना पड़ जाय तो विधि-विधान के अनुसार वह वैद्य ही नहीं रहता, क्योंकि अनुभव के आधार पर हुई रजिस्टेशन केवल अपने सूबे में ही वैद्यता रखती है। इस प्रकार वैद्यों की बहुत बड़ी संख्या को बेकारी और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस क्लास में लाखों की संख्या में लोग रजिष्टर्ड हुए हैं। साथ ही जनता को भी इनकी सेवा से वञ्चित होना पड़ जाता है। सर्व प्रथम तो रोगी इन्हीं वैद्य और हकीमों की सेवा से लाभान्वित होता है बड़े-बड़े विशेषज्ञों के पास तो अन्त में पहुंचता है और करोड़ों की संख्या में रोगी तो आदी से अन्त तक इनकी सेवा और परिचर्या में ही रहते हैं। यह कठिनाई प्रान्तीय न हो कर अखिल भारतीय है। इसका उचित समाधान यह है कि किसी भी राज्य में रजिस्टर हुए प्रत्येक वैद्य और हकीम को केन्द्र में रजिस्टर्ड करके देश के इस कोने से उस कोने तक प्रत्येक राज्य में चिकित्सा के लिए मान्यता प्रदान कर दी जाय, उस पर केन्द्रीय सरकार का कुछ खर्च नहीं आएगा और यदि सरकार चाहे तो प्रारम्भ में थोड़ा शुल्क भी ले सकती है। जिस धनराशि से अच्छा अनुसंधान केन्द्र खोला जा सकता है।

दूसरी मांग थी कि प्रत्येक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में ऐलोपेथिक डा० के साथ-साथ एक वैद्य अथवा हकीम रखा जाना चाहिये। जिसका समस्त व्यय-भार केन्द्रीय सरकार वहन करें। श्री रविराय जी ने अपने मोगा

भाषण में यह आश्वासन स्वयं दिया भी था। दोनों बातों पर हर दृष्टिकोण से देर तक विचार विनिमय हुआ और श्री मन्त्री महोदय को दोनों बातों में कुछ तत्व सार नज़र आया भी। उन्होंने तुरन्त अपने स्टेनो को बुला कर सारी बातचीत को लिपि-बद्ध करने का आदेश दिया और मुझे आश्वासन दिया कि विधि-विधान की सीमा में रह कर जो भी सम्भव होगा, वह अवश्य किया जाएगा और साथ यह भी कहा कि 15-20 दिन के बाद फिर इस विषय में स्मरण करवा देना।

यह आश्वासन लेकर मैं प्रसन्नता पूर्वक बस द्वारा दिल्ली से घर लौट पड़ा। सारी यात्रा आराम से कटी। हमारी बस लुधियाना की सीमा में प्रविष्ट हो चुकी थी। एक के बाद एक कारखाने को लांघती बस दौड़ी जा रही थी। जैसे ही बस ढंडारी गांव के पास पहुंची, एकाएक विपरीति दिशा से आ रहे एक भरे हुए ट्रक ने टक्कर मार दी। बस की फट्टी-फट्टी चरमरा उठी और वातावरण चीखो-पुकार से भयंकर और दर्दनाक हो गया। रात के दस बजे थे। अंधेरे को भयावहता को और द्विगुण कर दिया।

इस दुर्घटना में मेरा दाहिना बाज़ू और टांग क्षतिग्रस्त हो गई 6 सप्ताह पलस्तर लगा रहा। पलस्तर उतर जाने के बाद भी 4-5 सप्ताह हाथ ने कलम पकड़ना स्वीकार न किया। बाहर आने-जाने का प्रश्न ही समाप्त हो गया। रिक्शा की सहायता से धीरे-धीरे आना-जाना होने लगा। आवश्यक दैनिक कार्यों में दूसरे का सहयोग आवश्यक हो गया।

इस दुर्घटना का अफसोस नहीं वरन् प्रसन्नता है। इतनी बड़ी दुर्घटना और यह मामूली सी चोट मेरे आगे और पीछे वाले दोनों सज्जन प्रभु को प्यारे हो गए। मेरे साथ तो प्रभु ने बहुत ही रहम किया है अन्यथा जो कुछ भी हो जाता वह थोड़ा था। दुर्घटना की भीषणता और अपनी कुशलता को सोचकर मन प्रभु की अपरंपार लीला के सामने श्रद्धावनत हो जाता है।

सम्पादक के नाते मेरा

प्रथम कर्तव्य था कि मैं पहिले चरक-चर्चा के प्रकाशन की चिन्ता करता श्रौर हर हाल में पत्रिका प्रकाशित करता, साथ ही सम्मेलन के महामन्त्री के रूप में मेरा परम कर्तव्य था कि मैं सम्मेलन के कार्य को प्राथमिकता देकर समय रहते पारित प्रस्तावों को सरकार से कार्यान्वित करवाता जिससे लाखों लोगों को लाभ पहुंचता।

वस्तुत: मैं न तो केवल चरक-चर्चा का सम्पादक हूं श्रौर न केवल सम्मेलन का महामन्त्री हूं। मैं तो दोनों का संयुक्त रूप हूं, दो पृथक्-पृथक् व्यक्तित्वश्रों में धड़कने वाला दिल तो एक ही है श्रौर समय भी एक ही है। श्माम देश में एंग श्रौर चेंग दो भाई जुड़वां ही पैदा हुए थे। दोनों एक चौड़ी मास की पट्टी से एक दूसरे से जुड़े हुए थे सब श्रंग प्रत्यंग पृथक होते हुए भी दोनों का दिल एक था जो उस मास की पट्टी में स्थित था। मेरा व्यक्तित्व भी जुड़वां ही है। इस जुड़वां व्यक्तित्व के कारण ही चरक-चर्चा समय पर प्रकाशित न हो सकी।

श्राप लोगों की सद्भावनाश्रों के फलस्वरूप श्रब मैं पूर्ण स्वस्थ हूं। श्रब पत्रिका समय पर श्रापकी सेवा में प्रकाशित की जायेगी। पहले चरक-चर्चा चार मास बाद प्रकाशित होती थी श्रब प्रति मास प्रकाशित हुश्रा करेगी। वर्ष के श्रन्त में विशाल श्रंक प्रकाशित हुश्रा करेगा। जो जीवन भर साथ रखने के काबिल स्थाई साहित्य होगा।

श्राशा है श्राप सबका सहयोग निरन्तर प्राप्त होता रहेगा श्रब तक चरक-चर्चा दान के श्राधार पर प्रकाशित होती रही है यदि प्रेमी पाठक तनिक ध्यान दें तो पत्रिका श्रपने पैरों पर खड़ी हो सकती है। □

देखन में छोटे लगें

प्रिंसिपल आर. आर. भट्ट,
M. B. B. S,
कुठा पाडी (करनाटक)

सूतरशेख रस स्वर्णभस्म एवं स्वर्ण माक्षिक के सम्मिश्रण से बना हुआ अत्यन्त प्रसिद्ध तथा प्रभावी औषध है। देश के इस कोने से उस कोने तक इसका प्रयोग होता है, परन्तु 'लघु सूतशेखर इतना प्रसिद्ध नहीं है। "लघु सूतशेखर" नाम का ही लघु है, इसके कारनामे बहुत बड़े हैं। अनेक चिकित्सकाशास्त्री इसको देर से प्रयोग करते आ रहे हैं। कर्नाटक राज्य में इसका व्यापक रूप से प्रयोग होता है।

लघु सूतशेखर के घटक द्रव्य इतने सामान्य और सस्ते हैं कि प्रथम दृष्टि में यह योग चिकित्सक के मन को प्रभावित नहीं करता। कभी कभी सामान्य द्रव्य इतना प्रभावी काम कर देते हैं, यह देखकर आश्चर्य होता है। भगवान चरक का कथन है कि प्रत्येक द्रव्य में औषध तत्व विद्यमान है, चिकित्सक में रोग और औषध के मर्म को समझने की क्षमता चाहिये।

योग—

शुद्धस्वर्ण गैरिक 2 भाग
शुण्ठी चूर्ण 1 भाग

पान के पत्तों के रस में दो दिन तक खरल करके 150 mg की गोलियां बना कर धूप में सुखा लें।

श्री गंगाधर शास्त्री गुणेके अनुसार लघुसूतशेखर रस पित्त दोष तथा रस एवं रक्त धातु के रोगों के लिये लाभप्रद है अतः यह औषध अम्लपित्त, उत्क्लेश, वमन, भ्रम, शिरःशूल, अपचन, प्रलाप एवं EPISTEXIS नकसीर में लाभप्रद है।

दस वर्ष के निरन्तर प्रयोग के बाद हमने इस औषध-रत्न को अनेक रोगों में अत्यन्त प्रभावकारी पाया है। घटक द्रव्यों से तो ऐसा मालूम पड़ता है कि यह दवा पित्त रोगों पर ही लाभदायक है परन्तु कफप्रधान रोगों पर भी इसका पर्याप्त

असर देखा गया है। यद्यपि लघु सूतशेखर का प्रभावक्षेत्र सुवर्ण-सूत शेखर के प्रभावक्षेत्र से कई दृष्टियों से कुछ भिन्न है तथापि दोनों के मौलिक गुणधर्म में पर्याप्त साम्यता दृष्टिगोचर होती है। जीर्ण रोग तथा चिरकारी बद्धमूल रोगों में सुवर्णसूत शेखर अधिक प्रभावी है परन्तु लघुसूतशेखर तुरन्त और शीघ्र प्रभावकारी होने की क्षमता के कारण विशिष्ट गुण रखता है। परन्तु इसका प्रभाव बहुत गहराई में नहीं है। तो भी लघु-सूत शेखर का विशेष प्रभाव अलर्जी से होने वाले चर्म रोग, नाक तथा गले के रोगों पर अत्यन्त महत्वपूर्ण है। "However its action in Allergic disorders of skin, Nose, Throat etc. is specific in nature."

चिरकाल से अलर्जी से होने वाले कष्ट दिन प्रति दिन बढ़ते ही जा रहे हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की एन्टी हिस्टामिनिक औषधियां (Antihistaminic) जो कभी अलर्जी के लिये रामबाण मानी जाती थी अब फेल हो रही है। विज्ञान के लिये अलर्जी एक चुनौती बनती जा रही है। इसके साथ साथ यह बात पूर्ण रूपेण स्पष्ट है कि आधुनिक औषध समूह का अलर्जी पर प्रभाव नितान्त क्षणिक है।

एलर्जीजन्य कष्टों से छुटकारा पाने के लिये "लघुसूतशेखर" अत्यन्त प्रभावशाली औषध है। यह कष्ट चाहे नवीन हों चाहे पुराने जटिल हों, नवीन औषधियों के प्रयोग से चाहे कितनी ही भयावह स्थिति क्यों न हो गई हो "लघुसूतशेखर" अकेला अथवा अन्य औषधियों के साथ मिलकर एलर्जी-जन्य विभिन्न कष्टों के लिये रामबाण औषध प्रमाणित हुआ है।

प्रयोग—लघु सूतशेखर के प्रयोग में मात्रा का बहुत महत्व है। स्वल्पमात्रा में इसका प्रभाव नगण्य सा रहता है। सन्तोषजनक प्रभाव के लिये लघु-सूतशेखर बड़ी मात्रा में तथा बार बार देना चाहिये। कितनी ही बड़ी मात्रा में लघुसूतशेखर का प्रयोग क्यों न किया जाए, विषाक्त प्रभाव तथा हानि

का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। लघुसूतशेखर की मात्रा 1(0mg. से 2:0 mg. तक एक बार में दी जा सकती है, रोग और रोगी का बलावल देखकर दिन में 4 से 6 बार तक दे सकते हैं। लघुसूतशेखर के प्रभाव को हम संक्षेप में यों कह सकते हैं कि यह औषध नासिका तथा मुख से होने वाले अन्त:स्रवों को रोकता है, किसी सीमा तक आमाशय के अन्त:स्रावों और गतियों को भी सुधारता है, त्वचागत रोगों पर अत्यन्त प्रखर प्रभाव रखता है। जिससे त्वचा की खाल तथा जलन पर काबू पाता है विभिन्न रोगों पर लघुसूत्रशेखर का अनुभव विशेष रूप से लिखने का लोभ संवरण न कर सकूंगा।

(१) शीतपित्त, उदई (छपाकी) (Urticaria)—हर प्रकार के शीतपित्त के लिये लघुसूतशेखर अत्यन्त महत्वपूर्ण औषध है। एक दो दिन में ही औषध अपना प्रभाव दिखा देती है। परन्तु फिर भी एक सप्ताह तक इलाज करना चाहिये। पुराने बिगड़े हुए रोग में लघुसूतशेखर को प्रवाल पिष्टी, कामदुधारस, स्वर्णमाक्षिकभस्म, तथा सारिवा के योगों में मिला कर देने से तुरन्त लाभ करता है और वह स्थाई लाभ करता है।

(२) विसर्प-जनेऊ (Herpes and Erysipelas)—इस कष्ट के लिये कामदुधारस, प्रवाल एवं सारिवा के योग प्रयोग किए जाते हैं, यदि उनमें लघुसूतशेखर मिला दिया जाए तो उनका प्रभाव आशुकारी तथा स्थाई हो जाता है, जलन, पीड़ा तथा अन्यान्य लक्षण शीघ्र ठीक हो जाते हैं। दवा 2 से 4 सप्ताह तक करनी चाहिये।

(३) विचार्चिका एवं दद्रु (Eczema and Ringworms)—एग्जीमा और दाद की चिकित्सा में गंधक रसायन रस माणिक्य, सारिवा एवं खदिर के योग प्रयुक्त होते हैं। इन दवाइयों का सामान्य प्रभाव भी देर में होता है, पूर्ण लाभ के लिये तो बहुत समय लग जाता है। यदि इनके साथ में लघुसूतशेखर मिला कर दिया जाए तो औषध का प्रभाव तत्काल एवं चिरस्थायी

होता है। जलन (Irritation) तुरन्त ठीक हो जाती है, खारिश खतम हो जाती है, स्राव तुरन्त बन्द हो जाता है। पुराने त्वचा रोगों को लघुसूतशेखर अकेले ही ठीक कर देता है। विभिन्न औषधियों के साथ मिलाकर पामा एव Dermatitis आदि पर भी इसका प्रभाव अति उत्तम है।

(४) पीनस प्रातीष्या तथा शिर: शूल (Acute and chronic Rhinitis, Sinusitis, Allergic cough and Headaches) उपरोक्त सब कष्टों के लिये लघुसूत शेखर अत्यन्त लाभप्रद दवाई है। पुराने जीर्ण रोगों में इसके साथ गोदन्ती भस्म (0 5 gm to 1 gm) मिला कर देने से अत्यन्त सन्तोष जनक परिणाम प्राप्त होते हैं सूर्यावर्त (Solar Headache) अर्धावभेदक (Migraunef) अनन्तवात (cluster pain) जैसे जटिल शिरोरोग लघुसूतशेखर तथा गोदन्ती के सम्मिलित प्रयोग से तत्काल काबू में आ जाते हैं। जब नज़ला जुकाम के कारण बार बार छींकें आकर रोगी को परेशान कर रही हो अथवा पुराना स्वर-यन्त्र शोथ हो लघुसूतशेखर की योजना आश्चर्यजनक लाभ पहुंचाती है। संक्षेप में नवीन शिरशूल जिन में पित्त का प्रभाव अधिक हो लघुसूतशेखर के प्रभाव क्षेत्र में आते हैं।

(५) अम्लपित्त, वमन, उत्क्लेश तथा भ्रम (Hyper-acidity, vomiting Nausia, and giddiness) चिर-काल से बद्धमूल अम्लपित्त जी मिचलना, (उत्क्लेश) तथा वमन आदि उजीर्ण जन्य रोगों में लघु-सूतशेखर तुरन्त प्रभावकारी पाया गया है। पित्त-प्रकोप जन्य-भ्रमरोग तथा शिर:शूल में लघुसूतशेखर को सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। आवश्यकता होने पर इसके साथ प्रवाल पिष्टी सुवर्ण माक्षिकभस्म तथा कपद भस्म को भी मिला कर प्रयोग किया जा सकता है परन्तु ध्यान रहे लघुसूतशेखर का आमाशयव्रण, पक्काशयव्रण (Peptic ulcer) अथवा रक्त

भार पर (Hypertenlion) कोई प्रभाव नही है।

(६) अभिष्यन्द आंख आना (Conjunctivitis) फिटकरीद्रव (1% Alumiwater) नेत्रबिन्दु के रूप में आंख में डालना चाहिये। खाने की औषधियों में लघुसूतशेखर को अभिष्यन्द में (आंख आना) अत्यन्त लाभकारी पाया है। लघु सूतशेखर के प्रयोग से आंख का दर्द, जलन, खारिश आदि लक्षण तुरन्त शान्त हो जाते हैं, परन्तु रोग रोधक शक्ति (Preventive) नहीं देखी गई।

(७) योषापस्मार (Hysteria)—चिन्ता एवं पुराने मानसिक रोगों में भी (Psycho neuresis) लघु सूतशेखर को प्रभावकारी पाया गया है। यह मानसिक तनाव को घटाता है। तथा किसी सीमा तक मानसिक क्षोभ को भी शान्त करता हैं। मानसिक व्याधियों में लघुसूतशेखर को जटाभांसी, शंखपुष्पी, तथा सारस्वतारिष्ट आदि के साथ मिलाकर देना अधिक लाभकारी है।

इस प्रकार यदि लघुसूतशेखर को उचित मात्रा एवं परिस्थिति में प्रयोग किया जाए तो यह नाम छोटा होने पर भी प्रभाव में बड़ा प्रमाणित होगा। लघुसूतशेखर अत्यन्त सस्ता एवं अत्यन्त प्रभावी औषध रत्न है।

अन्त में हम आयुर्वेदिक चिकित्सकों से प्रार्थना करेंगे कि वह लघुसूतशेखर का प्रयोग करें और चमत्कार देखें। ●

नज़ला

श्री योगेश मुन्जाल, लुधियाना

अनजान आदमी द्वारा "चरक-चर्चा" जैसी आयुर्वेद की सम्मानित पत्रिका में लेख लिखना धृष्टता नहीं तो और क्या है? परन्तु धृष्टता मेरा स्वभाव नहीं है, विवशता है। मैं वैद्य नहीं हूं। शिक्षा से इंजीनियर हूं, व्यवसाय से इण्डस्ट्रिलिस्ट हूं। परिवार में भी कोई वैद्य नहीं है। मेरे सब सगे सम्बन्धी हीरो साइकिल बनाते हैं। रोगी का जितना सम्बन्ध हो सकता है वैद्य से, बस उतना ही हमारे परिवार का आयुर्वेद से सम्बन्ध है। पढ़ना-लिखना मेरी दुर्बलता है। अनेकानेक विषयों के साथ-साथ स्वास्थ्य साहित्य के अध्ययन में भी रुचि रखता हूं। देश-विदेश की अनेक पत्रिकाएं मंगवाता हूं, पढ़ता हूं, यथा सम्भव उन पर आचरण करने का यत्न भी करता हूं। यह यत्न वैद्य के रूप में नहीं प्रत्युत स्वस्थ रहने की कामना से भरपूर नागरिक के रूप में।

कविराज वेणीप्रसाद जी शास्त्री का चिकित्सक के रूप में हमारे परिवार में पर्याप्त आना जाना रहता है। वह जब भी घर आते हैं तो मेरे अध्ययन की चर्चा अवश्य करते हैं और मेरी अध्यनन सामग्री की उथल-पुथल भी अवश्य करते हैं और सदा ही उपयोगी एवं ग्रहणीय सामग्री को देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं से संग्रह कर सर्व-जन-हिताय चरक-चर्चा में लिखने का आगह करते रहते हैं। मैं सदा इस बात को हंसकर टालता रहा, परन्तु टालने की भी तो कोई सीमा है। श्री कविराज जी का धर्य असीम है। अन्ततः उनके आग्रह के सामने मैं हार गया और अब यह एक छोटा सा परन्तु अत्यन्त उपयोगी प्रयोग आपके समक्ष प्रस्तुत करने चला हूं।

नजला बहुत भयंकर रोग नहीं है। इसके निदान के लिये बड़े चिकित्सक की जरूरत नही पड़ती। परन्तु यह रोग होता बहुत बड़ी मात्रा में है। आबाल वृद्ध नर-नारी सबको समान रूप से आ घेरता है। कोई बड़ा

4636

नुकसान तो नहीं पहुंचाता मगर परेशान बहुत करता है। काम काज मे खरी खासी दिक्कत खड़ी कर देता है।

प्रत्येक चिकित्सा प्रणाली में इसके निवारण के उपाय भी मौजूद हैं। श्री कविराज वेणी प्रसाद जी अकसर कहा करते हैं कि यदि दवा न करोगे तो नजला सात आठ दिन दुख देगा और यदि दवा कर लोगे तो मात्र एक सप्ताह में ही रोग से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी। रोग शान्ति के साथ-साथ कभी-कभी दवाइयों की प्रतिक्रिया भी दु:खदायक हो जाती है।

जो प्रयोग मैं आपके सामने रखने जा रहा हूं इसकी कोई प्रतिक्रिया अथवा विषाक्त प्रभाव नहीं है और प्रत्येक व्यक्ति की पहुंच में भी है। प्रयोग इस प्रकार है। २०० ग्राम गर्म दूध में आधा चम्मच सोडा बाईकार्ब तथा २ चम्मच शहद मिला कर पिलादें और मुंह सिर ढांप कर सुला दें, थोड़ी देर में ही पसीना आकर शरीर हलका हो जाएगा यह प्रयोग २-३ दिन तक प्रात: सायं दोनों समय करने से शीघ्र ही नजले से छुटकारा हो जाएगा और किसी प्रकार की परेशानी भी न होगी। इस प्रयोग को अनेकों बार परीक्षण पर मैंने लाभ-प्रद पाया है।

मैं अन्त: मन से उस अज्ञात नाम चिकित्सक का धन्यवादी हूं जिसने यह सरल एवं सस्ता प्रयोग सुझाकर मानव-समाज पर भारी उपकार किया है। ○

---

० चेतावनी ०

१. अनरजिस्टर्ड वैद्य और हकीमों को तुरन्त रजिस्टर्ड किया जाए।
२. सरकारी वैद्य और हकीमों को तत्सम एलोपैथिक डाक्टरों के बराबर वेतन तथा अन्यन्य सुख सुविधाए प्रदान की जाएं।
३. ड्रग विभाग के छापे तुरन्त बन्द किए जाएं।
४. आयर्वेदिक कालेजों को मैडकल कालेजों के समान आर्थिक सहायता दी जाए।
५. आयुर्वेदिक फार्मेसियों को संरक्षण दिया जाए यदि सरकार ने इन उचित मांगों की ओर तत्काल ध्यान न दिया तो पंजाब वैद्य सम्मेलन को संघर्ष का मार्ग अपनाने के लिये वाध्य होना पड़ेगा।

मोगा अधिवेशन में पारित प्रस्तावों को सरकार द्वारा लागू करवाने के लिये सम्मेलन के मन्त्री श्री कविराज वेणीप्रसाद शास्त्री प्रयत्नशील हो चुके थे। दिल्ली चण्डीगढ़ का आना जाना चालू हो गया था। कार्यालय की टाईप मशीन पूरे वेग से खड़खड़ा रही थी। भारत के स्वास्थ्य मन्त्री श्री रविराय जी को मिल कर आते समय महामन्त्री जी दुर्घटनाग्रस्त हो चुके थे, परन्तु किसी प्रकार भी उत्साह में कमी Ayjurvedic Department को मिलने के लिए चण्डीगढ़ गया। डेपुटेशन में सम्मिलित महानुभावों के नाम इस प्रकार हैं—

प्रधान तीर्थराज जी वैद्य, डा० वेद , श जी लेखी. डा० कपिल देव डा० वेद प्रकाश जी वोहरा, ३ ूर्ण सिंह जी सिदकी, वैद्य बलदेव सिंह जी पंबार, हकीम चिरञ्जी लाल जी शर्मा, कविराज वेणी प्रसाद जी शास्त्री, कविराज शिवदत्त जी, श्री प्राणनाथ जी आयुर्वेदालंकार,

पंजाब वैद्य सम्मेलन का डेपुटेशन

डा० बेद प्रकाश बोहरा, लुधियाना

न आई थी। इसी बीच पंजाब सरकार ने सम्मेलन के डेपुटेशन को मिलने के लिये चण्डीगढ़ बुला लिया।

15-10-1979 को पंजाब वद्य सम्मेलन का डेपुटेशन सम्मेलन के नवीन प्रधान कविराज श्री तीर्थराज जी वैद्यवाचस्पति मोगा के नेतृत्व में Sh. B.R. Bajaj I.A.S. Deputy Seretary Health, Head of कृष्णचन्द जी गुप्ता को भी डेपुटेशन में सम्मिलित ही समझना चाहिये, क्योंकि फ्रांस शहीद कैसाबलांका की तरह उनको जिस स्थान पर नियुक्त किया गया था, सब काम काज छोड़कर, वह वहां पर ही डटे रहे।

३ बजकर ३० मिनट पर श्री बजाज साहब से चर्चा

प्रारम्भ हुई। सम्मेलन के प्रवक्ता के रूप में कविराज वेणीप्रसाद शास्त्री महामन्त्री ने बातचीत का सिलसिला शुरू किया। मन्त्री जी ने कहा कि 'पंजाब वैद्य सम्मेलन कभी भी व्यक्तिगत काम के लिये न सरकार के पास आया है और न ही भविष्य में कभी आएगा ही। किसी व्यक्ति विशेष से न हमारा लगाव है और न ही विरोध है।

वैद्य सम्मेलन मातृ-संस्था होने के कारण आयुर्वेद के प्रत्येक क्षेत्र और आयुर्वेद से सम्बन्ध रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के सुख-दु:ख, हानि-लाभ, वैज्ञानिक प्रगति एवं प्रसार के लिये उचित कार्यवाही करना अपना कर्तव्य समझता है। मन्त्री जी ने खुले दिल से श्री बजाज साहिब का धन्यवाद किया और उनको हार्दिक वधाई दी अब तक की गई विभागीय प्रगति के लिये आपने कहा कि जो काम आपने 9-10 मास के स्वल्प समय में कर दिखाया है। विभागीय वैद्य अधिकारी शायद कभी भी इसे कर न पाते।

आप प्रशासन विशेषज्ञ होने के नाते, चाहे इस प्रगति से सन्तुष्ट न हो और इसे छोटा सा काम समझते हों, परन्तु हमारे लिये तो यह काम ही महान है। आपने जिला अधिकारियों को नियुक्त कर दिया है। कालेज की सब रिक्त स्थान भर दिए गए हैं, विभाग में वरीयता की सूची बनाई है। इन मांगों को लेकर वर्षों से हम चण्डीगढ़ के चक्कर काटते रहे और कोई मार्ग बनता नज़र न आता था। आपने रिकार्ड टाइम में यह सब कर दिखाया एतदर्थ पंजाब का प्रत्येक वैद्य और हकीम आपका धन्यवादी है। आपने हमारे वर्षों के श्रम को सार्थक कर दिया है। श्री बजाज साहिब ने मुस्कराते हुए कहा कि यह तो अभी कुछ भी काम नहीं है अभी तो और बहुत कुछ करने को पड़ा है और यह कौन सा नया काम है हमने तो केवल आपके सुझाव और माँगों को ही पूरा किया है, मैं भी आप लोगों के सहयोग के लिये धन्यवादी हूं कि पंजाब वैद्य सम्मेलन ने कभी भी सर-

कारी काम-काज में अनुचित हस्तक्षेप नहीं किया। जब भी आप लोग आए हैं रचनात्मक कार्यक्रम लेकर ही आए हैं। आप लोगों का सहयोग और उदारता वस्तुतः श्लाघ्य है। सम्मेलन के महामन्त्री ने छपा हुआ 10 सूत्री कार्यक्रम पेश किया और क्रमशः प्रत्येक मांग पर विचार-विमर्श होने लगा।

(1) पंजाब में 20 हज़ार के लगभग वैद्य और हकीम बिना रजिस्ट्रेशन के काम कर रहे हैं वह दूर दराज देहात में जनता की भारी सेवा कर रहे हैं, परन्तु रजिस्ट्रेशन के न होने के कारण उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उन्हें तुरन्त रजिस्टर्ड कर लेना चाहिये जिससे इस समस्या का सदा के लिए समाधान हो जाए और जनता की सेवा भी जारी रखी जा सके।

श्री मन्त्री जी ने कहा कि इतनी बड़ी जनसंख्या को एकाएक बेरोजगार करना सरकार के बलबूते से बाहर की बात है और वह लोग पर्याप्त अनुभव भी रखते हैं और उनकी बहुत उपयोगिता भी है अतः रजिस्ट्रेशन अत्यावश्यक है। हमें इस बात को राष्ट्रीय समस्या के रूप में देखना चाहिये ना कि पंजाब वैद्य सम्मेलन की समस्या के रूप मे, श्री बजाज साहिब ने कहा कि विभाग ने कई बार सरकार से सिफारिश की है, आप लोग इस समस्या को सुलझाने के लिये मुख्यमन्त्री जी को मिलें और साथ ही बिना रजिस्ट्रेशन के काम करने वालों की जिलाबार लिस्ट बनाकर हमें दें, जिससे आपके पक्ष को बल मिलने की आशा है।

(२) आयुर्वेद विभाग का डायरेकटर किसी योग्य वैद्य को नियुक्त करना चाहिये जो सैंट्रल कौंसिल द्वारा निर्धारित योग्यता रखता हो, और उसकी नियुक्ति पब्लिक सर्विस कमिशन द्वारा की जानी चाहिये।

श्रीमन्त्री जी ने श्री बजाज साहिब का धन्यवाद करते हुए कहा कि आपने जो काम थोड़े से समय में किया है वह अत्यन्त प्रसशंसनीय है, और आप ही थे, जिन्होंने आयुर्वेदिक विभाग को

अव्यवस्था एवं मुकद्मे बाजी की दलदल से निकाल बाहिर किया है आपके विरुद्ध कहने को हमारे पास कोई शब्द नहीं है, परन्तु फिर भी हमारी अभिलाषा है कि व्यवस्था विषयक कार्यों का निपटारा हो जाने के बाद विभाग का अध्यक्ष किसी योग्य वैद्य को ही बनाया जाना चाहिये जो सैन्ट्रल कौंसिल द्वारा निर्धारित योग्यताएं पूरी करता हो और ऐसा व्यक्ति दूसरे राज्य से डैपुटेशन पर भी लाया जा सकता है, और स्थाई भी रखा जा सकता है। इस पर श्री बजाज साहिब मुस्कराये।

(३) युनानी की तरक्की के लिये डिप्टी डाइरेक्टर की नवीन पोष्ट बनाई जानी चाहिये और इस विज्ञान को मरने से बचाने के लिए कालेज खोला जाना चाहिये।

श्री मन्त्री जी ने कहा कि युनानी पूर्ण वैज्ञानिक यद्धति है इसका हमारी लापरवाही से नष्ट हो जाना विज्ञान और मानवता के लिये घोर उपेक्षा है। अतःसरकार को शीघ्र ही कालेज खोलना चाहिये जो सामायिक रूप से पटियाला आयुर्वेदिक कालेज के भवन में खुल सकता है, अपना भवन बन जाने पर वहां भेजा जा सकता है। श्री बजाज साहिब मांग से सहमत थे, परन्तु आपने कहा कि यह प्रश्न उच्च राजनैतिक स्तर पर सुलझाया जाना चाहिये, मैं इसमें कुछ करने में असमर्थ हूं।

(४) राजकीय आयुर्वेदिक कालेज में अडजस्टड स्टाफ को स्थाई कर देना चाहिये, परन्तु उनकी योग्यता पद के अनुरूप होनी चाहिये।

श्री बजाज साहिब ने कहा कि इस दिशा में यत्नशील हैं सब व्यवस्था बनाई जा रही है। श्री मन्त्री जी ने कालेज को व्यवस्थित करने के लिये श्री बजाज साहिब का धन्यवाद किया और शिक्षा स्तर को उन्नत करने की प्रार्थना की।

(५) आयुर्वेदिक फार्मेसी उद्योग एक घरेलू दस्तकारी है इसके साधन और सीमायें बहुत छोटी हैं। अत: इस पर लागू ड्रग एकट को ढ़ीला करना

चाहिये। टेक निकल परसन पार्ट टाइम रखने की सुविधा होनी चाहिये। ड्रग इंस्पेक्टर फार्मेसी विज्ञान को जानने वाले रखे जाने चाहियें, जो फार्मेसी वालों को निर्माण विषयक नवीन जानकारी दे सकें।

श्री बजाज साहेब ने पूछा आप चाहते हैं कि फार्मेशियों को खुला छोड़ दूं कोई नियन्त्रण न रखूं महामन्त्री जी—जी नहीं मेरा यह मतलब नहीं है। आयुर्वेदिक फार्मेसी एक घरेलू दस्तकारी है। मालिक, एजण्ट टैक्नीकल परसन सब काम एक ही आदमी कई फार्मेसियों में करता है। ऐसी दशा में वह सदा इन्सपैक्टर के डर से परेशान रहता है। एलोपैथिक फार्मेसियों में भी अभी कुछ समय पहले तक पार्ट टाइम टैक्निकल परसन होता था। उस इण्डस्ट्री में करोड़ों रुपया है, उसके सामने क्षेत्र भी विशाल है, अतः आयुर्वेदिक फार्मेसी को ग्लैक्स कम्पनी न समझा जाए। यदि आप पर्याप्त सुख सुविधाएं देंगे तो यह उद्योग शीघ्र फल फूल सकता है, नहीं तो भय और परेशानी में उलझ कर रह जाएगा।

श्री बजाज साहेब ने यह केस पृथक् से भेजने की राय दी और सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया।

(६) आयुर्वेदिक फैकल्टी का सचिव पूरे समय का योग्य वैद्य नियुक्त करना चाहिये, फैकल्टी का निर्माण भी नए सिरे से करना चाहिये, और इसमें पंजाब वैद्य सम्मेलन का प्रतिनिधि अवश्य लेना चाहिये।

श्री बजाज साहेब ने कहा कि मैं तो चाहता हूं कि फैकल्टी को समाप्त करके शिक्षा युनिवर्सिटी से जोड़ दी जाए। श्री मन्त्री जी ने कहा कि सरकार आयुर्वेद विद्यालयों को कुछ भी सहायता नहीं देती अतः अभी फैकल्टी का रखना लाभप्रद है। पंजाब वैद्य सम्मेलन अभी लुधियाना में आयुर्वेदिक कालेज खोलने की योजना बना रहा है, आशा है, आपका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

(७) डा० आसा सिह कमेटी की रिपोर्ट को तुरन्त लागू किया

जाना चाहिये।

डा० आसा सिंह कमेटी ने तहसील स्तर पर इण्डोर-हस्पताल वैद्यों की ट्रेनिंग का प्रबन्ध तथा सरकारी औषधालयों को अधिक औषधियां आदि की राय दी है जो व्यावहारिक एवं लाभप्रद है, अत: उसे तुरन्त लागू किया जाना जनता तथा विज्ञान के लिये लाभदायक है। श्री बजाज साहेब ने विचार करने का आश्वासन दिया।

(८) सुना है कि विभाग पटियाला में एक और आयुर्वेदिक हस्पताल खोलने जा रहा है। वहां पहले से ही कई हस्पताल हैं, अत: वह हस्पताल लुधियाना, जालन्धर, अमृतसर कहीं खोला जाना चाहिये।

श्री बजाज साहिब ने बताया कि सैन्ट्रल कौंसिल के आदेशानुसार आयुर्वेदिक विद्यार्थियों के लिये आयुर्वेदिक हस्पताल खोला जा रहा है अत: और स्थान का प्रश्न ही नहीं है।

(९) प्राइवेट आयुर्वेदिक कालेजों को मैडिकल कालेजों के समान आर्थिक सहायता मिलनी चाहिये।

श्री बजाज साहेब ने मांग से सहमति प्रकट करते हुए राय दी है कि एतदर्थ आप मन्त्रियों से मिलकर यत्न करें।

(१०) पंजाब वैद्य सम्मेलन अनेक बार स्वास्थ्य मन्त्री तथा विभागीय अधिकारियों से मिला है, अनेक मैमोरण्डम भेजे गए, परन्तु विभाग ने कभी भी किसी का कोई लिखित उत्तर नहीं दिया।

श्री बजाज साहेब ने आश्वासन दिया कि भविष्य में आपकी मांग का ध्यान रखा जाएगा।

(११) आयुर्वेदिक अधिकारियों को प्रेरणा दी जाए कि वह रचनात्मक कार्यों में मन लगावें जिससे विज्ञान की प्रगति हो और सरकारी धन का भी सही इस्तेमाल हो।

श्री मन्त्री जी ने सरकारी मशीनरी तथा धन के हुए प्रयोग का प्रत्यक्ष प्रमाण श्री बजाज साहेब को पेश किया। श्रीबजाज साहेब ने उसकी प्रतिलिपि तथा यह शिकायत पृथक् से भेजने को कहा और एक्शन लेने का

ग्राश्वासन भी दिलाया।

ग्रन्त में श्री तीर्थराम जी वैद्य प्रधान पंजाब वैद्य सम्मेलन ने सहयोग ग्रौर सौजन्य के लिये श्री बजाज साहेब का धन्यवाद किया।

श्री मंत्री जी से पूछने पर पता चला कि वह किसी भी ग्रायुर्वेदिक ग्रधिकारी की शिकायत के मामले को ग्रागे बढ़ाने को तैयार नहीं है। पंजाब वैद्य सम्मेलन किसी वैद्य को हानि पहुंचाने के हक में नहीं है। चेतावनी देना ग्रपना कर्तव्य समझता है।

श्री बजाज साहेब से विदा लेकर सरकारी वैद्य ग्रौर हकीमों के वेतनमान की वृद्धि के लिये विभिन्न राजनैतिक नेताग्रों को मिले। ग्रपना पक्ष समझाया कि हमारा वेतनमान तथा सम्मान सुख सुविधाएं ऐलोपेथिक डाक्टरों के बराबर होनी चाहिए उनसे ग्राश्वासन लेकर लुधियाना को लौट पड़े। इस ग्रवसर पर टैक्सी, भोजन, जलपान ग्रादि पर खर्च हुई सम्पूर्ण धनराशी डा० वेद प्रकाश जी लेखी सदस्य ग्रायुर्वेदिक बोर्ड ने ग्रपनी जेब से दी।

चण्डीगढ़ चलो

- ग्रपनी ठीक ग्रौर जाइज़ मांगें मनवाने के लिये एक दिन का समय निकालो ग्रौर चण्डीगढ़ मुख्यमन्त्री की कोठी पर धरना मारने के लिये चलो।
- ग्रायुर्वेदिक साइंस की तरक्की के लिये चण्डीगढ़ चलो।
- दुःखी जनता की भलाई के लिये चण्डीगढ़ चलो।
- वैद्यों ग्रौर हकीमों के सनमान की रक्षा के लिये चण्डीगढ़ चलो।
- यह समाचार ग्रपने ग्रास-पास के ग्रौर जानकार वैद्यों के ज्ञान में लाग्रो ग्रौर ग्रपना व उनका नाम व पता दफ्तर में भेजो।

पंजाब वैद्य सम्मेलन

कर्ता राम स्ट्रीट, लुधियाना

ਸੰਪਾਦਕ ਦੀ ਕਲਮ ਤੋਂ—

ਐਂਗ-ਚੈਂਗ

ਹੋਣਹਾਰ ਬੜੀ ਬਲਵਾਨ ਹੈ । ਜਿਹੜੇ ਹੋਣਹਾਰ ਨੂੰ ਬਦਲ ਦੇਣ ਦੀ ਸਮੱਰਥਾ ਰਖਦੇ ਨੇ ਉਹ ਮਹਾਂ ਪੁਰਖ ਹੁੰਦੇ ਨੇ । ਮੈਂ ਇੱਕ ਮਮੂਲੀ ਜਿਹਾ ਆਦਮੀ ਹਾਂ, ਈਮਾਨਦਾਰੀ ਨਾਲ ਇੱਛਾ ਹੁੰਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਵੀ ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਦੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨਾ ਚਾਲੂ ਨਾ ਰੱਖ ਸਕਿਆ ! ਪਹਿਲਾਂ ਤਾਂ ਸਲਾਨਾ ਸਮਾਗਮ ਦੇ ਬਾਰੇ ਮੰਤ੍ਰੀਆ ਦੇ ਚੱਕਰ ਵਿਚ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਅਤੇ ਦਿਲੀ ਦੀ ਪਰਦਖਣਾ ਕਰਦਾ ਰਿਹਾਂ । ਕਦੇ ਸ੍ਰੀ ਵਿਸ਼ਵਾਨਾਥਨ ਜੀ ਐਮ.ਅੰਲ.ਏ ਨਾਲ, ਕਦੇ ਸ੍ਰੀ ਕਪੂਰ ਚੰਦ ਜੀ ਜੈਨ ਐਮ.ਐਲ.ਏ. ਨਾਲ, ਕਦੇ ਵੈਦ ਤੀਰਥ ਰਾਮ ਜੀ, ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਦ ਸਾਹਿਬ ਸਾਥੀ ਰੂਪ ਲਾਲ ਜੀ M. L. A; ਚੌਧਰੀ ਬਲਬੀਰ ਸਿੰਘ ਜੀ ਐਮ ਪੀ, ਡਾ. ਵੇਦ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਜੀ ਲੇਖੀ, ਡਾ. ਕਪਲਦੇਵ ਜੀ ਹਰਗੁਣ, ਵੈਦ ਬਲਦੇਵ ਸਿੰਘ ਜੀ ਪਵਾਰ, ਡਾ. ਵੇਦ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਜੀ ਵੋਹਰਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਨਾ ਜਾਣੀਏ ਕਿੰਨਾ ਕੁ ਦੋਸਤਾਂ ਨਾਲ ਦਿੱਲੀ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਅਤੇ ਜਲੰਧਰ ਦੇ ਚਕਰ ਕੱਢੇ, ਸਭ ਦੇ ਚਕਰਾਂ ਦੀ ਕੋਈ ਗਿਣਤੀ ਹੈ, ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਸੇਵਾਦਾਰ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਤੇ ਸਾਰਿਆਂ ਨਾਲ ਹੀ ਜਾਣਾ ਪੈਂਦਾ ਸੀ ਇਸ ਤਰਾਂ ਇਹ ਦਿਨ ਰਾਤ ਨਠ-ਭਜ ਪੂਰੇ ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਹਜ਼ਮ ਕਰ ਗਈ । ਪਰ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਵੈਦ ਅਤੇ ਹਕੀਮ ਸਾਹਿਬਾਨ ਦੇ ਦਿਲੀ ਪ੍ਰੇਮ ਅਤੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਮੋਗਾ ਸਮਾਗਮ ਦੀ ਕਾਮਯਾਬੀ ਵੇਖਕੇ ਸਾਰੀ ਥਕਾਵਟ ਦੂਰ ਹੋ ਗਈ ।

ਹੁਣ ਮੋਗਾ ਸਮਾਗਮ ਦੀ ਸਾਰੀ ਸਮਿਗਰੀ ਇਕਠੀ ਕਰ ਕੇ ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਦੀ ਤਿਆਰੀ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿਤੀ ਗਈ, ਨਾਲ ਨਾਲ ਇਹ ਚਿੰਤਾ ਵੀ ਬਣੀ ਰਹੀ ਕਿ ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਸਿਹਤ ਮੰਤਰੀ ਸ੍ਰੀ ਰਵੀ ਰਾਏ ਜੀ ਜੋ ਵਾਇਦੇ ਮੋਗਾ ਸਮਾਗਮ ਤੇ ਕਰ ਗਏ ਹਨ ਜੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਨਠ ਭਜ ਕਰਕੇ ਛੇਤੀ ਲਾਗੂ ਨਾ ਕਰਵਾਇਆ ਗਿਆ ਤਾਂ ਮੋਗਾ ਸੰਮੇਲਨ ਦੀ ਸਾਰੀ ਮਿਹਨਤ ਅਜਾਈਂ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ । ਅਜੋਕੇ ਮੰਤਰੀਆਂ ਦੇ ਵਾਅਦੇ ਕੋਈ ਦਸ਼ਰਥ ਦੇ ਵਰਦਾਨ ਤਾਂ ਹਨ ਨਹੀਂ, ਜੋ ਅਟੱਲ ਹੋਣ, ਇਹ ਤਾਂ ਕਹਿੰਦੇ (ਵਾਅਦਾ ਕਰਦੇ) ਸਾਰ ਭੁੱਲ ਜਾਂਦੇ ਹਨ, ਕੁਝ ਦੇਰ ਬਾਦ ਤਾਂ ਸਾਰੀ ਦੀ ਸਾਰੀ ਘਟਨਾ ਨੂੰ ਦਿਮਾਗੋਂ ਕਢ ਕੇ ਅਜਨਬੀ ਬਣ ਜਾਂਦੇ ਹਨ । ਇਸ ਲਈ, ਸ੍ਰੀ ਰਵੀ ਰਾਏ ਜੀ ਨੂੰ ਮਿਲਕੇ ਪ੍ਰਸਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਲਾਗੂ ਕਰਵਾਉਣ ਤੋਂ ਮਗਰੋਂ ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਬਣਾਈ ।

ਹੁਣ ਫੇਰ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਚੱਕਰ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਗਏ; ਕਈ ਮਿਲਣੀਆਂ ਲੰਮੇ, ਚਿੱਠੀ-ਪੱਤਰ ਅਤੇ

ਨਿੱਤ ਦੀ ਟੈਲੀਫੋਨ ਦੀ ਗੱਲ ਬਾਤ ਨਾਲ ਕੁਝ ਬਣਤਰ ਬਣਦੀ ਦਿੱਸੀ । ਇਕ ਦਿਨ ਅਚਾਨਕ ਦਿੱਲੀ ਟੈਲੀਫੋਨ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਸੰਮੇਲਨ ਦੀ ਬਾਤਚੀਤ ਬਾਰੇ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੂੰ ਯਾਦ ਕਰਵਾਇਆ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਹਮੋ ਸਾਹਮਣੇ ਬੈਠ ਕੇ ਖੁਲ੍ਹੀ ਗੱਲਬਾਤ ਕਰਨ ਲਈ ਦਿੱਲੀ ਆਉਣ ਦਾ ਸੱਦਾ ਦੇ ਦਿੱਤਾ । ਲਿਹਾਜ਼ਾ 6.8.79 ਨੂੰ ਲੁਧਿਆਣਿਓਂ ਚਲ ਕੇ 7.8. 9 ਨੂੰ ਮੈਂ ਦਿੱਲੀ ਪਹੁੰਚ ਗਿਆ ।

ਸਾਢੇ ਨੌਂ ਵਜੇ ਸਵੇਰੇ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨਾਲ ਗੱਲ ਬਾਤ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਈ, ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੇ ਬੜੇ ਪਰੇਮ ਅਤੇ ਖੁਲ੍ਹੇ ਦਿਲ ਨਾਲ ਮੇਰੀਆਂ ਗੱਲਾਂ ਸੁਣੀਆਂ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਯਕੀਨ ਦਿਵਾਇਆ ਕਿ ਜੇ ਕੋਈ ਖ਼ਾਸ ਵੱਡੀ ਔਕੜ ਰਾਹ ਵਿਚ ਨਾ ਅੜ ਗਈ ਤਾਂ ਮੈਂ ਆਪਣਾ ਵਾਅਦਾ ਜਰੂਰ ਪੂਰਾ ਕਰਾਂਗਾ । ਮੇਰੀਆਂ ਦੋ ਮੰਗਾਂ ਸਨ,

(1) ਅਨੁਭਵ ਦੇ ਅਧਾਰ ਤ ਰਜਿਸਟਰ ਹੋਏ ਵੈਦਾਂ, ਹਕੀਮਾਂ ਨੂੰ ਸੈਂਟਰ ਦੇ ਰਜਿਸਟਰ ਵਿਚ ਦਰਜ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਉਸ ਨੂੰ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਇਕ ਕੋਨੇ ਤੋਂ ਦੂਜੇ ਕੋਨੇ ਤੱਕ ਹਰ ਥਾਂ ਤੇ ਰਜਿਸਟਰਡ ਵੈਦ ਦੇ ਨਾਤੇ ਚਿਕਿਤਸਾ ਕਰਨ ਦਾ ਅਧਿਕਾਰ ਹੋਵੇ ।

(2) ਦੂਜੀ ਗੱਲ ਇਹ ਸੀ ਕਿ ਹਰ ਪ੍ਰਾਇਮਰੀ ਹੈਲਥ ਸੈਂਟਰ ਵਿਚ ਡਾਕਟਰਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਇਕ ਵੈਦ ਜਾਂ ਹਕੀਮ ਰੱਖਿਆ ਜਾਵੇ । ਜਿਸਦਾ ਸਾਰਾ ਖ਼ਰਚਾ ਸੈਂਟਰ ਦੀ ਸਰਕਾਰ ਸਹਿਨ ਕਰੇ । ਇਹ ਵਾਅਦਾ ਮੰਤਰੀ ਮਹੋਦਯ ਮੋਗਾ ਅਧਿਵੇਸ਼ਨ ਵਿਚ ਕਰਕੇ ਆਏ ਸਨ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਸਟੈਨੋਂ ਨੂੰ ਸੱਦਿਆ ਤੇ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਬਾਤ ਉਸ ਨੂੰ ਸੁਣਾ ਕੇ ਸਾਰਾ ਕੇਸ ਟਾਈਪ ਕਰਕੇ ਲਿਆਉਣ ਦਾ ਹੁਕਮ ਦਿੱਤਾ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਪੰਦਰਾਂ ਵੀਹਾਂ ਦਿਨਾਂ ਮਗਰੋਂ ਸਾਰੀ ਗੱਲ ਬਾਤ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਦੀ ਖ਼ਬਰ ਲੈਣ ਦਾ ਮਤਾ ਪਕਾਇਆ ।

ਦੋ ਚਾਰ ਨਜ਼ਦੀਕੀ ਦੋਸਤਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਕੇ ਮੈਂ ਬੱਸ ਰਾਹੀਂ ਦਿੱਲੀਓਂ ਲੁਧਿਆਣੇ ਨੂੰ ਟੁਰ ਪਿਆ, ਸਾਰਾ ਸਫ਼ਰ ਬੜੇ ਅਨੰਦ ਨਾਲ ਬੀਤਿਆ ਆਖ਼ਰ ਸਾਡੀ ਬੱਸ ਲੁਧਿਆਣੇ ਦੀ ਹੱਦ ਵਿਚ ਦਾਖਲ ਹੋ ਗਈ, ਢੰਡਾਰੀ ਪਿੰਡ ਦੇ ਠੀਕ ਸਾਹਮਣੇ ਅਚਾਨਕ ਇਕ ਲੱਦੇ ਹੋਏ ਟ੍ਰਕ ਨੇ ਸਾਡੀ ਬੱਸ ਨਾਲ ਟੱਕਰ ਮਾਰੀ, ਰਾਤ ਦੇ ਦਸ ਵੱਜੇ ਸੀ ।

ਬੱਸ ਵਿਚ ਹਾਹਾਕਾਰ ਮਚ ਗਿਆ । ਮੇਰੇ ਅੱਗੇ ਡਰਾਈਵਰ ਸੀ, ਉਹ ਮਰ ਗਿਆ, ਪਿੱਛੇ ਵਾਲਾ ਵੀ ਮਰ ਗਿਆ ਅਤੇ ਹੋਰ ਵੀ ਬਹੁਤ ਨੁਕਸਾਨ ਹੋਇਆ, ਮੇਰੀ ਸੱਜੀ ਬਾਂਹ ਟੁੱਟ ਗਈ, ਲੱਤ ਬੁਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਜ਼ਖ਼ਮੀ ਹੋ ਗਈ, ਛੇ ਹਫਤੇ ਪਲਸਤਰ ਬੱਧਾ ਰਿਹਾ, ਸਾਰੇ ਕੰਮ ਠੱਪ ਹੋ ਗਏ । ਪਲਸਤਰ ਖੁਲ੍ਹਣ ਤੋਂ ਚਾਰ ਹਫ਼ਤੇ ਬਾਦ ਹੱਥ ਨੇ ਹੁਣ ਕਲਮ ਪਕੜਣੀ ਮਨਜ਼ੂਰ ਕੀਤੀ ਹੈ !

ਸੰਪਾਦਕ ਦੇ ਨਾਤੇ ਮੇਰਾ ਪਹਿਲਾ ਫ਼ਰਜ਼ ਸੀ ਕਿ ਮੈਂ ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਛਾਪਦਾ, ਆਪ ਜੀ ਦਾ ਦਾਸ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਤੇ ਮੇਰਾ ਪਹਿਲਾ ਫਰਜ਼ ਸੀ ਕਿ ਮੈਂ ਸੰਮੇਲਨ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਸਰਕਾਰ ਤੋਂ ਲਾਗੂ ਕਰਵਾਉਂਦਾ । ਅਸਲ ਵਿਚ ਸਿਆਮ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਜੰਮੇ ਐਂਗ ਤੇ ਚੈਂਗ ਦੋ ਜੁੜਵੇਂ

ਭਰਾਵਾਂ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਵੈਣੀ ਪ੍ਰਸਾਦ ਵਿਚ ਸੰਪਾਦਕ ਤੇ ਮਹਾਂ ਮੰਤਰੀ ਦਾ ਸੁਮੇਲ ਸੀ, ਨਾਂ ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਕ ਹੋ ਸਕੀ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਮੈਂ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦੁਬਾਰਾ ਜਾ ਸਕਿਆ। ਚਿੱਠੀ-ਪੱਤਰ ਅਤੇ ਮੈਮੋਰੰਡਮ ਰਾਹੀਂ ਬਥੇਰਾ ਗੁਭ-ਗੁਭਾਰ ਕੱਢਿਆ। ਇਹ ਸੀ ਉਹ ਹਾਲਾਤ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਕਰਕੇ ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਦੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਦਾ ਸਿਲਸਲਾ ਜਾਰੀ ਨਾ ਰਹਿ ਸਕਿਆ। ਮੈਂ ਫਿਰ ਉਸੇ ਗੱਲ ਨੂੰ ਦੁਹਰਾਉਣ ਲੱਗਿਆ ਹਾਂ ਕਿ—ਹੋਣਹਾਰ ਬੜੀ ਬਲਵਾਨ ਹੈ ! ਜੋ ਰੱਬ ਨੂੰ ਮਨਜ਼ੂਰ ਹੈ, ਸੋਈ ਹੋਕੇ ਰਹਿਣਾ ਹੈ ! ਇਸਦਾ ਇਹ ਭਾਵ ਨਹੀਂ ਕਿ ਆਪਾਂ ਹਥ ਤੇ ਹਥ ਧਰ ਕੇ ਬੈਠ ਜਾਈਏ, ਮਿਹਨਤ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰਨਾ ਆਦਮੀ ਦਾ ਫਰਜ਼ ਹੈ ਕਿਸੇ ਹਾਲ ਵਿਚ ਵੀ ਦਾਸ ਨੇ ਆਪਣੇ ਫ਼ਰਜ਼ ਤੋਂ ਨੱਠਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਨਹੀਂ ਕੀਤੀ !

ਅੱਗੇ ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਚੌਂਹ ਮਹੀਨਿਆਂ ਮਗਰੋਂ ਛਪਦੀ ਹੁੰਦੀ ਸੀ ਹੁਣ ਰੱਬ ਦੀ ਕਿਰਪਾ ਨਾਲ ਹਰ ਮਹੀਨੇ ਛੱਪ ਕੇ ਵਕਤ ਸਿਰ ਆਪ ਸਭ ਤਕ ਪੁਜਿਆ ਕਰੇਗੀ। ਮੈਂ ਆਸ ਕਰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਆਪ ਸਭ ਦਾ ਪ੍ਰੇਮ ਅਤੇ ਸਹਿਯੋਗ ਪਹਿਲਾਂ ਨਾਲੋਂ ਵੀ ਜਿਆਦਾ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੁੰਦਾ ਰਹੇਗਾ। ਆਪ ਸਭ ਦੋਸਤਾਂ ਅਤੇ ਮਹਾਰਾਜ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦੀ ਹਾਂ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਜਨਮ ਜਨਮਾਂਤਰ ਦੇ ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ ਪਾਪਾਂ ਦੀ ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ, ਨਾਮ ਮਾਤਰ ਸਜ਼ਾ ਦੇਕੇ ਜਾਨ ਬਖ਼ਸ਼ੀ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਅਤੇ ਕੁਝ ਦਿਨ ਹੋਰ ਸੇਵਾ ਦਾ ਮੌਕਾ ਬਖ਼ਸ਼ਿਆ ਹੈ। ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਆਪ ਜੀ ਦੀ ਹੀ ਹੈ। ਆਪ ਇਸਦੇ ਮਾਲਕ ਹੋ ! ਵੈਦ-ਮੰਡਲਾਂ ਦੀਆਂ ਖਬਰਾਂ, ਔਕੜਾਂ ਅਤੇ ਅਪਣੇ ਤਜਰਬੇ ਭੇਜਣ ਦੀ ਕਿਰਪਾਲਤਾ ਕਰੋ, ਸਭ ਖੁਸ਼ੀ ਖੁਸ਼ੀ ਛਪੇ ਜਾਣਗੇ।

—o—

ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ

ਭਾਈ ਸਾਹਿਬ 10 ਰੁ: ਪ੍ਰਤੀ ਸਲਾਨਾ ਦੇ ਹਿਸਾਬ ਨਾਲ ਅਪਣਾ ਸਲਾਨਾ ਚੰਦਾ ਭੇਜ ਕੇ ਆਯੁਰਵੇਦਿਕ ਅਤੇ ਵੈਦ ਸਮਾਜ ਦੀ ਰਖਿਆ ਵਿਚ ਕਿਰਤ 'ਚਰਕ ਚਰਚਾ' ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਕਰਕੇ ਆਪਣਾ ਫਰਜ ਪੂਰਾ ਕਰੋ।

ਦੇਖਣ ਮੇਂ ਛੋਟੇ ਲੱਗੇਂ

ਸ੍ਰੀ ਆਰ. ਆਰ. ਭਾਟ M.B.B.S. ਕਰਨਾਟਕ ਰਾਜ

ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਰਸ ਸਵਰਨ ਭਸਮ ਅਤੇ ਸੋਨਾਂ ਮੱਖੀ ਦੇ ਮਿਲਾਪ ਨਾਲ ਬਣੀ ਹੋਈ ਆਯੂਰਵੇਦ ਦੀ ਮਸ਼ਹੂਰ ਦਵਾਈ ਹੈ। ਵੱਡੇ ਤੋਂ ਵੱਡੇ ਵੈਦਰਾਜ ਬੜੇ ਹੌਂਸਲੇ ਨਾਲ ਇਸਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਹਨ। "ਪਰੰਤੂ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਰਸ" ਇਨਾਂ ਮਸ਼ਹੂਰ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਪਰ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਨਾਂ ਦਾ ਹੀ ਲਘੂ ਛੋਟੀ ਹੈ ਪਰ ਇਹਦੇ ਮਗਰ ਕਾਰਨਾਮੇ ਬਹੁਤ ਵੱਡੇ ਵੱਡੇ ਹਨ। ਅਨੇਕ ਮੰਨੇ ਪਰਮੰਨੇ ਵੈਦਰਾਜ ਦੇਰ ਤੋਂ ਇਹਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਆ ਰਹੇ ਹਨ। ਕਰਨਾਟਕ ਰਾਜ ਵਿਚ ਇਹ ਦਵਾਈ ਬਹੁਤ ਮਸ਼ਹੂਰ ਹੈ।

ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਰਸ ਵਿਚ ਦੋ ਚੀਜਾਂ ਪੈਂਦੀਆਂ ਹਨ ਤੇ ਦੋਨੋਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਸਾਧਾਰਣ ਅਤੇ ਸੱਸਤੀਆਂ ਵੀ ਹਨ। ਪਹਿਲੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿਚ ਤਾਂ ਇਹ ਦਵਾਈਆਂ ਮਨ ਤੇ ਅਸਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀਆਂ। ਯਕੀਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਇਹ ਮਾਮੂਲੀ ਜਿਹੀਆਂ ਚੀਜ਼ਾਂ ਬੀਮਾਰੀ ਤੇ ਇਨਾਂ ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਅਸਰ ਕਰ ਸਕਦੀਆਂ ਹਨ। ਹਰ ਚੀਜ਼ ਵਿਚ ਕੋਈ ਨਾ ਕੋਈ ਖਾਸ ਗੁਣ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਬੀਮਾਰੀ ਅਤੇ ਦਵਾਈ ਦੇ ਮਰਮ ਨੂੰ ਸਮਝਣ ਦੀ ਲਿਆਕਤ ਹੋਣੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ।

ਯੋਗ—

ਸ਼ੁਧ ਸਵਰਨ-ਗਰਿਕ ਦੋ ਤੋਲਾ

ਸੁੰਢ ਇਕ ਤੋਲਾ।

ਪਾਣ ਪੱਤੇ ਦੇ ਰੱਸ ਵਿੱਚ ਦੋ ਦਿਨ ਤੱਕ ਖਰਲ ਕਰਕੇ 150 M.G. ਦੀਆਂ ਗੋਲੀਆਂ ਬਣਾ ਕੇ ਧੁਪ ਵਿਚ ਸੁਕਾ ਲਵੋ ਇਹ ਹੈ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਰਸ ਕਾਮ ਬੜੇ ਅਤੇ ਦਰਸ਼ਨ ਛੋਟੇ।

ਸ੍ਰੀ ਗੰਗਾਧਰ ਸ਼ਾਸ਼ਤਰੀ ਗੁਣੇ ਦੇ ਮਤ ਅਨੁਸਾਰ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਰਸ ਪਿਤ ਦੋਸ਼ ਅਤੇ ਰਸ ਅਤੇ ਰਕਤ ਪਾਤ ਦੇ ਰੋਗਾਂ ਦੇ ਫ਼ਾਇਦੇਮੰਦ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਦਵਾਈ ਅਮਲਪਿਤ, ਜੀ ਮਚਲਾਣਾ, ਉਲਟੀ, ਸਿਰ ਚਕਰਾਣਾ, ਸਿਰ ਦਰਦ, ਬੱਦ ਹੱਜ਼ਮੀ, ਬੜਬੜਾਨਾਂ ਅਤੇ Epistexis ਲਈ ਫਾਇਦੇਮੰਦ ਹੈ।

ਦਸ ਸਾਲ ਦੀ ਰਿਸਰਚ ਦੇ ਬਾਦ ਅਸੀਂ ਇਸ ਦਵਾਈ ਨੂੰ ਅਨੇਕ ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਫਾਇਦੇਮੰਦ ਪਾਇਆ ਹੈ। ਦਵਾਈ ਦੀ ਬਣਤਰ ਤੋਂ ਇਦਾਂ ਜਾਪਦਾ ਹੈ ਕਿ

ਇਹ ਦਵਾ ਸ਼ਾਇਦ ਪਿੱਤ ਪ੍ਰਧਾਨ ਰੋਗਾਂ ਤੇ ਹੀ ਫਾਇਦਾ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਅਸੀਂ ਕਫ ਪ੍ਰਧਾਨ ਰੋਗਾਂ ਤੇ ਵੀ ਇਹਦਾ ਜਾਦੂ ਜਿਹਾ ਅਸਰ ਦੇਖਿਆ ਹੈ। ਅਗਰਚੇ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਦੇ ਅਸਰ ਦਾ ਦਾਇਰਾ ਸਵਰਨ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਦੇ ਅਸਰ ਦੇ ਹਲਕੇ ਤੋਂ ਵੱਖ ਹੈ ਪਰ ਫ਼ਿਰ ਵੀ ਦੋਨਾਂ ਦੇ ਮੌਲਿਕ ਗੁਣ ਧਰਮਾਂ ਵਿਚ ਇਕ ਜੋਤੀ ਨਜ਼ਰ ਆਉਂਦੀ ਹੈ। ਪੁਰਾਣੇ ਬਿਗੜੇ ਤਿਗੜੇ ਰੋਗਾਂ ਵਿਚ ਸਵਰਨ ਸੂਤ ਸੇਖਰ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਪਰੰਤੂ ਤਤਕਾਲ ਫਾਇਦੇ ਲਈ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਮਾਲ ਦਾ ਅਸਰ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਅਲਰਜੀ ਤੋਂ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਚਮੜੀ ਦੇ ਰੋਗ ਨੱਕ ਅਤੇ ਗਲੇ ਦੇ ਰੋਗਾਂ ਦੇ ਲਈ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਰਸ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਮਾਲ ਦਾ ਅਸਰ ਰਖਦੀ ਹੈ।

> "However its action in allergic
> disorders of skin nose throat etc.
> is specific in nature."

ਬਹਤ ਸਮੇਂ ਤੋਂ ਅਲਰਜੀ ਤੋਂ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਕਸ਼ਟ ਦਿਨ-ਬਦਿਨ ਵਧਦੇ ਹੀ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਆਧੁਨਿਕ ਚਿਕਿਤਸਾ ਵਿਗਿਆਨ ਦੀਆਂ ਐਂਟੀ ਹਿਸਟਾਮਿਨਿਕ ਦਵਾਈਆਂ ਜੋ ਕਦੀ ਅਲਰਜੀ ਸੰਬੰਧੀ ਰਾਮਬਾਣ ਮੰਨੀਆਂ ਜਾਂਦੀਆਂ ਸਨ, ਹੁਣ ਫੇਲ੍ਹ ਹੋ ਗਈਆਂ ਹਨ। ਵਿਗਿਆਨ ਲਈ "ਅਲਰਜੀ" ਇਕ ਸਮੱਸਿਆ ਬਣਦੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ, ਇਸਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਇਹ ਗੱਲ ਪੂਰਨ ਤੌਰ ਤੇ ਸਪਸ਼ਟ ਹੈ ਕਿ ਆਧੁਨਿਕ ਦਵਾਈਆਂ ਦਾ ਅਸਰ ਅਲਰਜੀ ਦੇ ਤੇ ਖਿਣ-ਮਾਤਰ ਹੀ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ।

ਅਲਰਜੀ ਤੋਂ ਹੋਣ ਵਾਲੀਆਂ ਤਕਲੀਫ਼ਾਂ ਲਈ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਇਕ ਅਤਿਅੰਤ ਪ੍ਰਭਾਵਕਾਰੀ ਦਵਾਈ ਹੈ, ਇਹ ਕਸ਼ਟ ਭਾਵੇਂ ਨਵੀਨ ਹੋਣ ਭਾਵੇਂ ਪੁਰਾਣੇ ਹੋਣ, ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦਵਾਈਆਂ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਨਾਲ ਭਾਵੇਂ ਕਿੰਨੀ ਖਤਰਨਾਕ ਹਾਲਤ ਕਿਉਂ ਪੈਦਾ ਹੋ ਗਈ ਹੋਵੇ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਇਕੱਲਾ ਅਤੇ ਹੋਰ ਦਵਾਈਆਂ ਨਾਲ ਮਿਲਕੇ ਅਲਰਜੀ ਵਾਲੀਆਂ ਭਾਂਤ ਭਾਂਤ ਦੀਆਂ ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਤੇ ਰਾਮਬਾਣ ਪ੍ਰਭਾਵ ਕਰਦਾ ਹੈ।

ਵਰਤੋਂ :—ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਵਿਚ ਮਾਤ੍ਰਾ ਦਾ ਬਹੁਤ ਮਹੱਤਵ ਹੈ। ਥੋੜੀ ਮਾਤ੍ਰਾ ਵਿਚ ਇਹ ਪ੍ਰਭਾਵ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਕਰਦੀ ਹੈ। ਭਰੋਸੇ ਯੋਗ ਪ੍ਰਭਾਵ ਲਈ ਵਧੇਰੀ ਮਾਤ੍ਰਾ ਵਿਚ ਅਤੇ ਬਾਰਬਾਰ ਦੇਣਾ ਉਪਯੋਗੀ ਹੈ। ਭਾਵੇਂ ਕਿੰਨੀ ਵੀ ਵੱਧ ਮਾਤ੍ਰਾ ਵਿਚ ਕਿਉਂ ਨਾ ਵਰਤਿਆ ਜਾਵੇ, ਹਾਨੀ ਅਤੇ ਦੂਸ਼ ਪ੍ਰਭਾਵ ਰਹਿਤ ਹੈ। ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਦੀ ਮਾਤ੍ਰਾ (ਖੁਰਾਕ) 100 Mg. ਤੋਂ 250 Mg. ਇਕ ਵਾਰ ਵਿਚ ਦਿਤੀ ਜਾ ਸਕਦੀ ਹੈ। ਰੋਗ ਅਤੇ ਰੋਗੀ ਦਾ ਬਲ ਵੇਖਕੇ ਦਿਨ ਵਿਚ 4 ਤੋਂ 6 ਵਾਰ ਤਕ ਦਿਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਨੂੰ ਅਸੀਂ ਸੰਖੇਪ ਵਿਚ ਇਜ ਕਹਿ ਸਕਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਇਹ ਦਵਾਈ ਨਾਸ਼ਾਂ ਅਤੇ ਮੂੰਹ ਤੋਂ ਵਗਣ ਵਾਲੇ ਮਾਦੇ ਨੂੰ ਰੋਕਦੀ ਹੈ, ਕਿਸੇ ਹੱਦ ਤਕ ਪੇਟ ਦੇ ਅੰਦਰਲੇ ਵਗਣ ਵਾਲੇ ਮਾਦੇ ਨੂੰ ਵੀ ਰੋਕਦੀ ਹੈ। ਚਮੜੀ ਦੀਆਂ ਬੀਮਾਰੀਆਂ ਤੇ ਵੀ ਬਹੁਤ

ਜ਼ੋਰਦਾਰ ਅਸਰ ਹੈ ਜਿਸ ਲਈ ਚਮੜੀ ਖਾਜ ਅਤੇ ਜਲਣ ਤੇ ਛੇਤੀ ਕਾਬੂ ਪਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਭਿੰਨ ਭਿੰਨ ਰੋਗਾਂ ਤੇ ਹੁਣ ਮੈਂ ਇਸਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵ ਪ੍ਰਤੀ ਆਪਣਾਂ ਅਨੁਭਵ ਦਸਦਾ ਹਾਂ :—

(1) **ਛਪਾਕੀ :**— ਹਰ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀ ਛਪਾਕੀ ਲਈ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਅਤਿਅੰਤ ਮਹੱਤਵ ਪੂਰਣ ਹੈ। ਇਕ ਦੋ ਦਿਨਾਂ ਵਿਚ ਹੀ ਦਵਾਈ ਆਪਣਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਦਿਖਾ ਦਿੰਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਫਿਰ ਵੀ 7—8 ਦਿਨ ਤੱਕ ਦਵਾਈ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨੀ ਚਾਹੀਦੀ। ਪੁਰਾਣੇ ਬਿਗੜੇ ਹੋਏ ਰੋਗ ਲਈ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਨੂੰ ਪਰਵਲ ਪਿਸ਼ਟੀ ਕਾਮਦੁਧਾਰਸ ਸਵਰਵ ਮਾਕਸ਼ਕ ਭਸਮ ਅਤੇ ਸਾਰਿਵਾ ਦੇ ਯੋਗਾਂ ਵਿਚ ਮਿਲਾਕੇ ਦੇਣ ਨਾਲ ਸਥਾਈ ਲਾਭ ਦਿੰਦਾ ਹੈ।

(2) **ਜਨੇਊ** :—ਇਸ ਕਸ਼ਟ ਲਈ ਕਾਮਦੂਧਾਰਸ, ਪ੍ਰਵਾਲ ਅਤੇ ਸਾਰਿਵਾ ਦੇ ਪ੍ਰਯੋਗ ਵਰਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਜੇਕਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਮਿਲਾਕੇ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਛੇਤੀ ਅਤੇ ਸਥਾਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਲਨ ਪੀੜ, ਆਦਿਕ ਤਕਲੀਫਾਂ ਛੇਤੀ ਹਟ ਜਾਂਦੀਆਂ ਹਨ। 2 ਤੋਂ 4 ਹਫਤੇ ਤਕ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨੀ ਜਰੂਰੀ ਹੈ।

(3) ਐਗਜ਼ੀਮ੍ਹਾ ਅਤੇ ਦੱਦ ਦੀ ਚਕਿਤਸਾ ਵਿਚ ਗੰਧਕ ਰਸਾਇਣ, ਰਸਮਾਣਿਕ, ਸਾਰਿਵਾ ਅਤੇ ਕੱਥਾ ਦੇ ਨੁਸਖੇ ਵਰਤੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

(4) ਇਨ੍ਹਾਂ ਦਵਾਈਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਵੀ ਚਿਰ ਬਾਦ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪੂਰੇ ਲਾਭ ਲਈ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਦੇਰ ਲਗ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਮਿਲਾਕੇ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਉਪ੍ਰੋਕਤ ਦਵਾਈਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਤੱਤਕਾਲ ਤੇ ਸਥਾਈ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਲਨ, ਖਾਰਿਸ਼ ਤੇ ਪਾਵੀਜਾਵਾ ਆਦਿਕ ਫੌਰਨ ਬੰਦ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਚਮੜੀ ਦੇ ਪੁਰਾਣੇ ਰੋਗਾਂ ਨੂੰ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਇਕੱਲਾ ਹੀ ਠੀਕ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਹੋਰ ਦਵਾਈਆਂ ਨਾਲ ਮਿਲਕੇ ਪਾਮਾ, ਅਤੇ ਡਰਮਾਟਾਈਟਸ ਤੇ ਵੀ ਇਸ ਦਾ ਪ੍ਰਭਾਵ ਅਤੀ ਉੱਤਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

(5) ਸਿਰ ਦਰਦ, ਵਿਗੜਿਆ ਹੋਇਆ ਨਜ਼ਲਾ, ਅਲਰਜਿਕ ਖਾਂਸੀ, ਆਦਿ ਉਪ੍ਰੋਕਤ ਸਾਰੇ ਰੋਗਾਂ ਹਿਤ ਲਘੂ ਸੂਤ ਸ਼ਖਰ ਅਤਿਅੰਤ ਲਾਭਕਾਰੀ ਹੈ। ਜੀਰਣ ਰੋਗਾਂ ਵਿਚ ਇਸ ਦੇ ਨਾਲ ਗੋਦੰਤੀ ਭਸਮ 4 ਰੱਤੀ ਤੋਂ 8 ਰੱਤੀ ਤਕ ਮਿਲਾਕੇ ਦੇਣ ਨਾਲ ਅਤਿਅੰਤ ਪ੍ਰਭਾਵਕਾਰੀ ਸਿਧ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸੂਰਜ ਚੜ੍ਹਨ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਵਧਣ ਵਾਲਾ ਸਿਰਦਰਦ, ਅੱਧੇ ਸਿਰ ਦਾ ਦਰਦ, ਅਨੰਤ ਵਾਤ (ਉੱਲਾਂ) ਵਰਗੇ ਜਟਿਲ ਰੋਗ ਗੋਦੰਤੀ ਮਿਸ਼ਰਣ ਨਾਲ ਸਥਾਈ ਲਾਭ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਨਜ਼ਲਾ ਜ਼ੁਕਾਮ ਦੇ ਕਾਰਨ ਬਾਰਬਾਰ ਨਿੱਛਾਂ ਆਕੇ ਰੋਗੀ ਨੂੰ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹੋਣ ਜਾਂ ਪੁਰਾਣਾ ਗਲੇ ਦੀ ਸੋਜ਼ਸ਼ (ਸ੍ਵਰ ਯੰਤ੍ਰ ਸ਼ੋਥ) ਲਈ ਲਘੂਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਅਸਚਰਜ ਜਨਕ ਲਾਭ ਪਹੁੰਚਾਉਂਦੀ ਹੈ।

(6) ਅਮਲ ਪਿੱਤ, ਉਲਟੀ ਆਉਣਾ, ਜੀ ਮਿਚਲਾਣਾ, ਚੱਕਰ ਆਉਣਾ ਇਨ੍ਹਾਂ

ਰੋਗਾਂ ਵਿਚ ਵੀ ਲਘੂਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਤੁਰੰਤ ਪ੍ਰਭਾਵਕਾਰੀ ਹੈ । ਜ਼ਰੂਰਤ ਪੈਣ ਤੇ ਇਸ ਨਾਲ, ਕਪਰਦਿਕਾ ਭਸਮ, ਪ੍ਰਵਾਲ ਭਸਮ, ਸ੍ਵਰਣ ਮਾਕਸ਼ਿਕ ਭਸਮ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਲਾਭਕਾਰੀ ਹੈ । ਪਰ ਧਿਆਨ ਰਖਣਾ ਕਿ ਲਘੂਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ, ਮੇਧੇ ਦਾ ਜ਼ਖਮ, ਪੈਪਟਿਕ ਅਲਸਰ, ਹਾਈ ਬਲੱਡ ਪ੍ਰੈਸ਼ਰ ਆਦਿ ਰੋਗਾਂ ਤੇ ਕੋਈ ਅਸਰ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ ।

(7) **ਅਖ ਦੁਖਣਾ** :—ਲਘੂਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਖਾਣ ਨਾਲ ਅੱਖ ਦਾ ਦਰਦ, ਜਲਣ, ਖਾਰਿਸ਼, ਫੌਰਨ ਬੰਦ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ।

(8) ਹਿਸਟੀਰੀਆ, ਚਿੰਤਾ ਆਦਿਕ ਪੁਰਾਣੇ ਮਾਨਸਿਕ ਰੋਗਾਂ ਤੇ ਵੀ ਲਘੂਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਸ਼ੀਘਰ ਪ੍ਰਭਾਵਕਾਰੀ ਸਿਧ ਹੋਇਆ ਹੈ । ਮਨੋਰੋਗਾਂ ਵਿਚ ਇਸ ਨੂੰ, ਸੰਖਪੁਸ਼ਪੀ, ਜ਼ਟਾਮਾਂਸੀ, ਅਤੇ ਸਾਰਸਵਤਾਰਿਸ਼ਟ ਨਾਲ ਮਿਲਾਕੇ ਦੇਣਾ ਅਧਿਕ ਲਾਭਕਾਰੀ ਹੈ ।

ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਜੇਕਰ ਲਘੂਸੂਤ ਸੇਖਰ ਨੂੰ ਠੀਕ ਮਾਤਰਾ ਤੇ ਲੋੜੀਂਦੀ ਥਾਂ ਤੇ ਵਰਤਿਆ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਇਹ ਨਾਮ ਵਿਚ ਛੋਟਾ (ਲਘੂ) ਹੁੰਦਿਆਂ ਹੋਇਆਂ ਵੀ ਪ੍ਰਭਾਵ ਵਿਚ ਵਡਾ ਸਿੱਧ ਹੁੰਦਾ ਹੈ । ਲਘੂਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਅਤਿਅੰਤ ਸਸਤਾ ਅਤੇ ਅਤਿਅੰਤ ਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀ ਔਸ਼ਧੀ ਰਤਨ ਹੈ ।

ਅੰਤ ਵਿਚ ਅਯੂਰਵੇਦ ਚਕਿਤਸਕਾਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਲਘੂਸੂਤ ਸ਼ੇਖਰ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਨ ਅਤੇ ਇਸਦੇ ਚਮਤਕਾਰ ਵੇਖਣ ।

ਨੋਟ :—ਸਾਧੂਆਂ ਦੇ ਕਪੜੇ ਰੰਗਣ ਵਾਲੀ ਗੇਰੀ ਸ੍ਵਰਣ ਗੈਰਿਕ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ, ਜਿਸ ਗੇਰੂ ਨੂੰ ਸੁਨਿਆਰ ਵਰਤਦੇ ਹਨ ਉਹ ਸ੍ਵਰਣ ਗੈਰਿਕ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

—o—

ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਚਲੋ !

ਕੀ ਤੁਸੀਂ ਸਮਾਜ ਦਾ ਜੀਵਨ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋ ? ਜੇ ਹੋ, ਤਾਂ ਚੰਦੀਗੜ੍ਹ ਚਲੋ । ਇਕ ਦਿਨ ਦਾ ਧਰਨਾ ਚੀਫ ਮਨਿਸੱਟਰ ਦੀ ਕੋਠੀ ਤੇ ਮਾਰਿਆ ਜਾਵੇਗਾ ਤੇ ਆਪਣੀਆਂ ਜਾਇਜ ਮੰਗਾਂ ਦਾ ਮੈਮੋਰੰਡਮ ਪੇਸ਼ ਕਰਕੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਮੰਗਾਂ ਨੂੰ ਮਨਵਾਇਆ ਜਾਏਗਾ । ਤਰੀਕ ਦਾ ਇੰਤਜਾਰ ਕਰੋ । ਜਲਦੀ ਜਲਦੀ ਆਪਣਾ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਸਾਥੀਆਂ ਦਾ ਨਾਮ ਪਤਾ ਸਾਡੇ ਕਾਰਯਾਲੇ ਨੂੰ ਲਿਖ ਭੇਜੋ । ਧੰਨਵਾਦ ! ਤੁਸੀ ਸਾਡਾ ਸਾਥ ਦਿਓ ਅਸੀਂ ਤੁਹਾਨੂੰ ਚੰਗੇ ਜੀਵਨ ਦੀ ਗਰੰਟੀ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ।

ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਦਾ ਡੈਪੂਟੇਸ਼ਨ

ਡਾ: ਵੇਦ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ 'ਵੋਹਰਾ' ਲੁਧਿਆਣਾ

ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਦੇ ਮੋਗਾ ਸਮਾਗਮ ਵਿਚ ਪਾਸ ਪ੍ਰਸਤਾਵਾਂ ਨੂੰ ਸਰਕਾਰ ਵਲੋਂ ਲਾਗੂ ਕਰਵਾਉਣ ਲਈ ਸੰਮਲਨ ਦੇ ਮੰਤਰੀ ਸ੍ਰ: ਕਵੀ ਰਾਜ ਬੇਣੀ ਪ੍ਰਸਾਦ ਸ਼ਾਸਤਰੀ ਯਤਨ ਸ਼ੀਲ ਹੋ ਚੁਕੇ ਸਨ। ਦਿਲੀ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਆਉਣਾ ਜਾਣਾ ਚਾਲੂ ਹੋ ਗਿਆ ਸੀ। ਦਫ਼ਤਰ ਦੀ ਟਾਈਪ ਮਸ਼ੀਨ ਪੂਰੇ ਵੇਗ ਨਾਲ ਖੜਖੜਾ ਰਹੀ ਸੀ। ਭਾਰਤ ਦੇ ਸਿਹਤ ਮੰਤਰੀ ਸ੍ਰੀ ਰਬੀ ਰਾਏ ਜੀ ਨੂੰ ਮਿਲਕੇ ਆਉਂਦੇ ਸਮੇਂ ਮੰਤ੍ਰੀ ਜੀ ਦੁਰਘਟਨਾ ਸਤ ਹੋ ਗਏ ਸਨ ਪਰ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਕਾਰ ਵੀ ਉਤਸ਼ਾਹ ਵਿਚ ਕਮੀ ਨਹੀਂ ਆਈ ਸੀ ਜਿਸ ਦਰਮਿਆਨ ਪੰਜਾਬ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਸੰਮੇਲਨ ਦੇ ਡੈਪੂਟੇਸ਼ਨ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਲਈ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਬੁਲਾ ਲਿਆ।

16-10-79 ਨੂੰ ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਦਾ ਡੈਪੂਟੇਸ਼ਨ ਸੰਮੇਲਨ ਦੇ ਨਵੇਂ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਵੀਰਾਜ ਸ੍ਰੀ ਤੀਰਥ੍ਰਾਜ਼ ਜੀ ਵੈਦ ਮੋਗਾ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਵਿਚ Sh B. R. Bajaj I As Deputy Secretary Health Head of Ayjurvedic Deptt. ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਲਈ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਗਿਆ। ਡੈਪੂਟੇਸ਼ਨ ਵਿਚ ਸਰਬ ਸ੍ਰੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਸ੍ਰੀ ਤੀਰਥਰਾਜ ਜੀ ਵੈਦ ਸ੍ਰੀ ਵੇਦ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਜੀ ਲੇਖ਼ੀ ਡਾ: ਕਪਿਲ ਦੇਵ, ਸ੍ਰੀ ਵੇਦ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵੋਹਰਾ, ਸੰਪੂਰਨ ਸਿੰਘ ਸਿਦਕੀ ਸ੍ਰੀ ਬਲਦੇਵ ਸਿੰਘ ਪਵਾਰ, ਹਕੀਮ ਚਿਰੰਜੀ ਲਾਲ, ਕਵਿਰਾਜ ਬੇਣੀ ਪ੍ਰਸਾਦ ਸ਼ਾਸ਼ਤਰੀ, ਸ਼ਿਵਦਤ, ਪ੍ਰਾਨ ਨਾਥ, ਸ੍ਰੀ ਕ੍ਰਿਸ਼ਨ ਚੰਦ ਗੁਪਤਾ ਨੂੰ ਵੀ ਡੈਪੂਟੇਸ਼ਨ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਸਮਝਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਫ੍ਰਾਂਸ ਸ਼ਹੀਦ ਸ਼ਹੀਦ ਕੇਸਾਤਲਾਂਕਾ ਦੀ ਤਰਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਜਿਸ ਸਥਾਨ ਤੇ ਨਿਯੁਕਤ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਸੀ, ਸਭ ਕੰਮ ਕਾਜ ਛਡ ਕੇ ਉਹ ਉਥੇ ਹੀ ਡਟੇ ਰਹੇ।

3 ਵਜ ਕੇ 30 ਮਿਟ ਤੇ ਸ਼੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨਾਲ ਚਰਚਾ ਆਰੰਭ ਹੋਈ। ਸੰਮੇਲਨ ਦੇ ਬੁਲਾਰੇ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕਵੀਰਾਜ ਬੇਣੀ ਪ੍ਰਸਾਦ ਸ਼ਾਸ਼ਤਰੀ ਮੰਤ੍ਰੀ ਨੇ ਗਲਬਾਤ ਆਰੰਭੀ। ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਕਦੀ ਵੀ ਵਿਅਕਤੀ ਗਤ ਕੰਮ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਕੋਲ ਨਾ ਆਇਆ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਕਦੀ ਆਵੇਗਾ। ਕਿਸੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਵਿਅਕਤੀ ਨਾਲ ਨਾ ਸਾਡਾ ਲਗਾਅ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਵਿਰੋਧ ਹੈ।

ਪੰਜਾਬ ਵਦ ਸੰਮੇਲਨ ਮਾਤ੍ਰ ਸੰਸਥਾ ਹੋਣ ਦੇ ਕਾਰਨ ਆਯੁਰਵੈਦਿਕ ਦੇ ਹਰੇਕ ਖੇਤਰ ਅਤੇ ਆਯੁਰਵੇਦ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧ ਹਰ ਵਿਅਕਤੀ ਦੇ ਸੁਖ ਦੁਖ ਲਾਭ ਹਾਨੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਪੂਰਤੀ ਲਈ ਉਚਿਤ ਕਾਰਵਾਈ ਕਰਨਾ ਆਪਣਾ ਫਰਜ ਸਮਝਦਾ ਹੈ। ਮੰਤਰੀ ਨੇ ਖੁਲੇ ਦਿਲ ਨਾਲ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹਾਰਦਿਕ ਵਧਾਈ

ਦਿਤੀ । ਹੁਣ ਤਕ ਦੀ ਪ੍ਰਗਤੀ ਲਈ ਕੀਤੇ ਕੰਮਾਂ ਬਾਰੇ ਸ਼ਲਾਘਾ ਕੀਤੀ । ਵਿਭਾਗੀ ਵੈਦ ਅਧਿਕ ਰੀ ਸ਼ਾਇਦ ਕਦੀ ਵੀ ਅਜੇਹਾ ਨਾ ਕਰ ਸਕਦੇ ।

ਆਪ ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਨ ਮਾਹਿਰ ਹੋਣ ਦੇ ਨਾਤੇ ਚਾਹੇ ਇਸ ਪ੍ਰਗਤੀ ਨਾਲ ਸੰਤੁਸ਼ਟ ਨਾ ਹੋਵੋ ਅਤੇ ਇਸ ਨੂੰ ਛੋਟਾ ਜਿਹਾ ਕੰਮ ਸਮਝਦੇ ਹੋਵੋ ਪਰੰਤੂ ਸਾਡੇ ਲਈ ਤਾਂ ਇਹ ਕੰਮ ਹੀ ਮਹਾਨ ਹੈ । ਆਪ ਨੇ ਜ਼ਿਲਾ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਨਿਯੁਕਤ ਕਰ ਦਿਤਾ ਹੈ । ਕਾਲਜ ਦੀਆਂ ਸਭ ਖਾਲੀ ਥਾਵਾਂ ਭਰ ਦਿਤੀਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ, ਵਿਭਾਗ ਵਿਚ ਸਿਨਿਓਰਟੀ ਦੀ ਸੂਚੀ ਬਨਾਈ ਗਈ ਹੈ । ਇਨ੍ਹਾਂ ਮੰਗਾਂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਵਰ੍ਹਿਆਂ ਤੋਂ ਅਸੀਂ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਦੇ ਚਕਰ ਕਟਦੇ ਰਹੇ ਕੋਈ ਰਾਹ ਦਿਸਦਾ ਨਜ਼ਰ ਨਹੀਂ ਆਉਂਦਾ ਸੀ । ਆਪਨੇ ਰਿਕਾਰਡ ਟਾਈਮ ਵਿਚ ਇਹ ਸਭ ਕਰ ਦਿਖਾਇਆ ਅਤੇ ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਹਰੇਕ ਵੈਦ ਅਤੇ ਹਕੀਮ ਆਪ ਦਾ ਇਸ ਲਈ ਧੰਨਵਾਦੀ ਹੈ। ਆਪ ਨੇ ਸਾਡੀ ਵਰ੍ਹਿਆਂ ਤੋਂ ਮਿਹਨਤ ਨੂੰ ਸਾਰਥਕ ਕਰ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ । ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਮੁਸਕਰਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਤਾਂ ਅਜੇ ਕੁਝ ਵੀ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਅਜੇ ਕਰਨਾ ਬਾਕੀ ਪਿਆ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਕਿਹੜਾ ਨਵਾਂ ਕੰਮ ਹੈ, ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਕੇਵਲ ਆਪਣੇ ਸੁਝਾਅ ਅਤੇ ਮੰਗਾਂ ਨੂੰ ਹੀ ਪੂਰਾ ਕੀਤਾ ਹੈ । ਮੈਂ ਵੀ ਆਪ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਲਈ ਧੰਨਵਾਦੀ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਨੇ ਕਦੀ ਵੀ ਸਰਕਾਰੀ ਕੰਮ ਕਾਜ ਵਿਚ ਗੈਰਜ਼ਰੂਰੀ ਦਖਲ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ । ਜਦੋਂ ਵੀ ਆਪ ਲੋਕ ਆਏ ਹੋ ਰਚਨਾਤਮਕ ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮ ਲੈ ਕੇ ਆਏ ਹੋ । ਸੰਮੇਲਨ ਲਈ ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ਨੇ ਦਸਿਆ ਹੋਇਆ 10 ਸੂਤਰੀ ਪ੍ਰੋਗ੍ਰਾਮ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਕ੍ਰਮਵਾਰ ਹਰੇਕ ਮੰਗ ਤੇ ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ ਹੋਣ ਲਗਾ ।

(1) ਪੰਜਾਬ ਵਿਚ 20 ਹਜ਼ਾਰ ਦੇ ਲਗਭਗ ਵੈਦ ਅਤੇ ਹਕੀਮ ਬਿਨਾਂ ਰਜਿਸ-ਟ੍ਰੇਸ਼ਨ ਲਈ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ । ਉਹ ਦੂਰ ਦਰਾਜ ਦੇਹਾਤ ਵਿਚ ਜਨਤਾ ਦੀ ਭਾਰੀ ਸੇਵਾ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਪਰ ਰਜਿਸਟ੍ਰੇਸ਼ਨ ਦੇ ਨਾ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅਨੇਕ ਕਠਨਾਈਆਂ ਦਾ ਸਾਹਮਣਾ ਕਰਨਾ ਪੈ ਰਿਹਾ ਹੈ । ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਤੁਰੰਤ ਰਜਿਸਟਰਡ ਕਰ ਲੈਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜਿਸ ਨਾਲ ਇਸ ਸਮਸਿਆ ਦਾ ਹਲ ਹੋ ਜਾਵੇ ਅਤੇ ਜਨਤਾ ਦੀ ਸੇਵਾ ਵੀ ਜਾਰੀ ਰਖੀ ਜਾ ਸਕੇ ।

ਪ੍ਰਧਾਨ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਤਨੀ ਵਡੀ ਜਨਸੰਖਿਆ ਨੂੰ ਬੇਰੁਜ਼ਗਾਰ ਕਰਨਾ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਬਲਬੂਤੇ ਤੋਂ ਬਾਹਰੀ ਗਲ ਹੈ ਅਤੇ ਲੋਕ ਤਜਰਬਾ ਵੀ ਰਖਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਬਹੁਤ ਉਪਯੋਗਿਤਾ ਵੀ ਹੈ । ਇਸ ਲਈ ਰਜ਼ਿਸਟਰੇਸ਼ਨ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ । ਸਾਨੂੰ ਤਾਂ ਇਸ ਗਲ ਨੂੰ ਕੌਮੀ ਸਮਸਿਆਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਦੇਖਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਨਾ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਦੀ ਸਮਸਿਆ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਵਿਭਾਗ ਨੇ ਕਈ ਵਾਰ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਸਿਫਾਰਸ਼ ਵੀ ਕੀਤੀ ਹੈ, ਤੁਸੀਂ ਇਸ ਸਮਸਿਆਂ ਨੂੰ ਸੁਲਝਾਉਣ ਲਈ ਮੁਖ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਅਤੇ ਨਾਲ ਹੀ ਬਿਨਾਂ ਰਜ਼ਿਸਟਰੇਸ਼ਨ ਲਈ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਜ਼ਿਲਾਵਾਰ ਲਿਸਟ ਬਨਾ ਕੇ ਸਾਨੂੰ ਦੇਣ ਜਿਸ ਨਾਲ ਆਪਦੇ ਪਖ ਨੂੰ ਬਲ ਮਿਲਣ ਦੀ ਆਸ ਹੈ ।

(2) ਆਯੁਰਵੇਦ ਵਿਭਾਗ ਦਾ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਕਿਸੇ ਯੋਗ ਵੈਦ ਨੂੰ ਨਿਯੁਕਤ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜੋ ਸੈਂਟਰਲ ਕੌਂਸਲ ਦੁਆਰਾ ਨਿਰਧਾਰਿਤ ਯੋਗਤਾ ਰਖਦਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਉਸਦੀ ਨਿਯੁਕਤੀ ਪਬਲਿਕ ਸਰਵਿਸ ਕਮਿਸ਼ਨ ਰਾਹੀਂ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ।

ਸ੍ਰੀ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੇ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਤੁਸੀਂ ਜੋ ਕੰਮ ਥੋੜੇ ਜਿਹੇ ਸਮੇਂ ਵਿਚ ਕੀਤਾ ਹੈ ਉਹ ਅਤਿਅੰਤ ਪ੍ਰਸੰਸਾ ਯੋਗ ਹੈ ਅਤੇ ਆਪ ਹੀ ਸਨ ਜਿਨਾਂ ਨੇ ਅਯੁਰਵੈਦਿਕ ਵਿਭਾਗ ਨੂੰ ਮੁਕਦਮੇ ਬਾਜੀ ਦੀ ਦਲਦਲ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਕਢਿਆ ਹੈ । ਆਪਦੇ ਵਿਰੁਧ ਕਹਿਣ ਨੂੰ ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਕੋਈ ਸ਼ਬਦ ਨਹੀਂ ਹੈ ਪਰੰਤੂ ਫਿਰ ਵੀ ਸਾਡੀ ਇਹ ਕਾਮਣਾ ਹੈ ਕਿ ਵਿਵਸਥਾਪੂਰਵਕ ਕਾਰਜਾਂ ਦਾ ਨਿਪਟਾਰਾ ਹੋ ਜਾਣ ਦੇ ਬਅਦ ਵਿਭਾਗ ਦਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਕਿਸੇ ਯੋਗ ਵੈਦ ਨੂੰ ਹੀ ਬਣਾਇਆ ਜਾਵੇ ਜੋ ਸੈਂਟਰਲ ਕੌਂਸਿਲ ਵਲੋਂ ਨਿਰਧਾਰਤ ਯੋਗਤਾਵਾਂ ਪੂਰੀਆਂ ਕਰਦਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਅਜਿਹਾ ਵਿਅਕਤੀ ਦੂਜੇ ਰਾਜ ਤੋਂ ਡੈਪੂਟੇਸ਼ਨ ਤੇ ਵੀ ਲਿਆਂਦਾ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਸਥਾਈ ਵੀ ਰਖਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ । ਇਸ ਤੇ ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਮੁਸਕਰਾਏ ।

(3) ਯੂਨਾਨੀ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਲਈ ਡਿਪਟੀ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਦੀ ਨਵੀਨ ਪੋਸਟ ਬਣਾਈ ਜਾਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਵਿਗਿਆਨ ਨੂੰ ਮਰਨ ਤੋਂ ਬਚਾਣ ਲਈ ਕਾਲਜ ਖੋਲਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ । ਸ੍ਰੀ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਯੂਨਾਨੀ ਪੂਰੰਨ ਵਿਗਿਆਨਕ ਸਿਸਟਮ ਹੈ ਇਸਦਾ ਸਾਡੀ ਲਾਪਰਵਾਹੀ ਨਾਲ ਨਸ਼ਟ ਹੋ ਜਾਣਾ ਵਿਗਿਆਨ ਤੇ ਮਾਨਵਤਾ ਲਈ ਘੋਰ ਅਨਿਆਂ ਹੈ । ਇਸ ਲਈ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ ਜਲਦੀ ਹੀ ਕਾਲਜ ਖੋਲ੍ਹਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਜੋ ਫਿਲਹਾਲ ਪਟਿਆਲਾ ਆਯੂਰਵੈਦਿਕ ਕਾਲਜ ਦੇ ਭਵਨ ਵਿਚ ਖੁਲ੍ਹ ਸਕਦਾ ਹੈ, ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਮੰਗ ਨਾਲ ਸਹਿਮਤ ਸਨ ਪਰ ਆਪਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਪ੍ਰਸ਼ਨ ਉਚ ਰਾਜਨੀਤਕ ਪਧਰ ਤੇ ਸੁਲਝਾਇਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਮੈਂ ਇਸ ਲਈ ਕੁਝ ਕਰਨ ਤੋਂ ਅਸਮਰਥ ਹਾਂ ।

(4) ਰਾਜ ਪੱਧਰ ਦੇ ਆਯੁਰਵੈਦਿਕ ਕਾਲਜ ਵਿਚ ਅੱਡਜਸਟ ਸਟਾਫ ਨੂੰ ਸਥਾਈ ਕਰ ਦੇਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਪਰ ਉਸਦੀ ਯੋਗਤਾ ਪਦ ਦੇ ਅਨੁਰੂਪ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ ।

ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਉਹ ਇਸ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਯਤਨਸ਼ੀਲ ਹਨ ਤੇ ਸਭ ਵਿਵਸਥਾ ਬਣਾਈ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ । ਸ੍ਰੀ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੇ ਕਾਲਜ ਨੂੰ ਵਿਵਸਥਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਸਿਖਿਆ ਪਧਰ ਉੱਨਤ ਕਰਨ ਦੀ ਪ੍ਰਾਰਥਨਾ ਕੀਤੀ ।

(5) ਆਯੂਰਵੈਦਿਕ ਫਾਰਮੇਸੀ ਸਨਅਤ ਇਕ ਘਰੇਲੂ ਦਸਤਕਾਰੀ ਹੈ । ਇਸਦੇ ਸਾਧਨ ਅਤੇ ਸੀਮਾਵਾਂ ਬਹੁਤ ਛੋਟੀਆਂ ਹਨ । ਇਸ ਲਈ ਇਸ ਤੇ ਲਾਗੂ ਡਰਗ ਐਕਟ ਨੂੰ ਢਿੱਲਾ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ । ਟੇਕ, ਨਿਕਲ ਪਰਸਨਲ ਪਾਰਟ ਟਾਇਮ ਰਖਣ ਦੀ ਸਹੂਲਤ ਹੋਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ । ਡਰਗ ਇੰਸਪੈਕਟਰ ਫਾਰਮੇਸੀ ਵਿਗਿਆਨ ਨੂੰ ਜਾਨਣ ਵਾਲੇ ਰਖੇ ਜਾਣੇ

ਚਾਹੀਦੇ ਹਨ ਜੋ ਫਾਰਮੇਸੀ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਨਿਰਮਾਨ ਵਿਧਿਆਂ ਤੇ ਨਵੀਨੀਕਰਨ ਬਾਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦੇ ਸਕਣ।

ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਪੁਛਿਆ, ਤੁਸੀ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹੋ ਕਿ ਫਾਰਮੇਸੀਆਂ ਨੂੰ ਖੁਲ੍ਹਾ ਛਡ ਦਿਆਂ ਤੇ ਕੋਈ ਕਾਬੂ ਨਾ ਰਖਾਂ ਮਹਾਂ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨਹੀਂ ਮੇਰਾ ਮਤਲਬ ਇਹ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਆਯੂਰਵੈਦਿਕ ਫਾਰਮੇਸੀ ਇਕ ਘਰੇਲੂ ਦਸਤਕਾਰੀ ਹੈ । ਮਾਲਿਕ, ਏਜੰਟ ਟੈਕਨੀਕਲ ਪਰਸਨ ਸਭ ਕੰਮ ਇਕ ਹੀ ਆਦਮੀ ਕਈ ਫ਼ਾਰਮੇਸੀਆਂ ਵਿਚ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਅਜੇਹੀ ਦਸ਼ਾ ਵਿਚ ਉਹ ਸਦਾ ਇੰਸਪੈਕਟਰ ਦੇ ਡਰ ਤੋਂ ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ । ਐਲੋਪੈਥਿਕ ਫਾਰਮੇਸੀਆਂ ਵਿਚ ਵੀ ਅਜੇ ਕੁਝ ਸਮਾ ਪਹਿਲਾਂ ਤਕ ਪਾਰਟ ਟਾਈਮ ਟੈਕਨੀਕਲ ਪਰਸਨ ਹੁੰਦਾ ਸੀ। ਉਸ ਇੰਡਸਟਰੀ ਵਿਚ ਕਰੋੜਾਂ ਰੁਪਿਆ ਹੈ ਉਸਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਖੇਤਰ ਵੀ ਵਿਸ਼ਾਲ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਆਯੂਰਵੈਦਿਕ ਫਾਰਮੇਸੀ ਨੂੰ ਗਲੈਕਸੋ ਕੰਪਨੀ ਨਾ ਸਮਝਿਆ ਜਾਵੇ। ਜੇ ਆਪ ਪੂਰੀਆਂ ਸੁਖ ਸਹੂਲਤਾਂ ਦਿਓਗੇ ਤਾਂ ਇਹ ਉਧਯੋਗ ਛੇਤੀ ਹੀ ਫਲ ਫੂਲ ਸਕਦਾ ਹੈ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਡਰ ਅਤੇ ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨੀ ਵਿਚ ਉਲਝ ਕੇ ਰਹਿ ਜਾਵੇਗਾ।

ਸ੍ਰੀ ਬਜ ਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਇਹ ਕੇਸ ਵਾਪਸ ਭੇਜਣ ਦੀ ਕਹਿ ਦਿਤੀ ਅਤੇ ਹਮਦਰਦੀ ਨਾਲ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਦਾ ਭਰੋਸਾ ਦਿਤਾ।

(6) ਆਯੂਰਵੈਦਿਕ ਫ਼ੈਕਲਟੀ ਦਾ ਸਕੱਤਰ ਪੂਰੇ ਸਮੇਂ ਦਾ ਯੋਗ ਵੈਦ ਨਿਯੁਕਤ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ, ਫੈਕਲਟੀ ਦਾ ਨਿਰਮਾਣ ਵੀ ਨਵੇਂ ਸਿਰੇ ਤੋਂ ਕਰਨਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਸ ਵਿਚ ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਦਾ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧ ਜ਼ਰੂਰ ਲੈਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸ ਹਿਬ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮੈਂ ਤਾਂ ਚਾਹੁੰਦਾ ਹਾਂ ਕਿ ਫੈਕਲਟੀ ਨੂੰ ਖਤਮ ਕਰਕੇ ਸਿਧਿਆਂ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਨਾਲ ਜੋੜ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇ। ਸ੍ਰੀ ਮੰਤਰੀ ਜੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰ ਆਯੂਰਵੈਦਿਕ ਵਿਸ਼ਵਵਿਦਿਆਲਿਆਂ ਨੂੰ ਕੁਝ ਵੀ ਸਹਾਇਤਾ ਨਹੀਂ ਦਿੰਦੀ । ਇਸ ਲਈ ਅਜੇ ਫੈਕਲਟੀ ਦਾ ਰਖਣਾ ਲਾਭਦਾਇਕ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਅਤੇ ਲੁਧਿਆਣਾ ਵਿਚ ਆਯੂਰਵੈਦਿਕ ਕਾਲਜ ਖੋਹਲਣ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਬਣਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਆਸ ਹੈ ਤੁਹਾਡਾ ਪੂਰਨ ਸਹਿਯੋਗ ਮਿਲੇਗਾ।

(7) ਡਾ: ਆਸਾ ਸਿੰਘ ਕਮੇਟੀ ਦੀ ਰਿਪੋਰਟ ਨੂੰ ਤੁਰੰਤ ਲਾਗੂ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ।

'ਡਾ. ਆਸਾ ਸਿੰਘ ਕਮੇਟੀ ਨੇ ਤਹਿਸੀਲ ਧੱਪਰ ਤੇ ਇੰਡੋਰ ਹਸਪਤਾਲ ਵੈਦਾਂ ਦੀ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਦਾ ਅਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਦਵਾਖ਼ਾਨਿਆਂ ਨੂੰ ਜ਼ਿਆਦਾ ਦਵਾਈਆਂ ਦੇਣ ਦੀ ਰਾਏ ਦਿੱਤੀ ਹੈ, ਜੋ ਕਿ ਵਿਵਹਾਰਿਕ ਅਤੇ ਲਾਭਵੰਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਲਈ ਉਸਨੂੰ ਤੱਤਕਾਲ ਲਾਗੂ ਕੀਤਾ ਜਾਣਾ ਜਨ-ਸਾਧਾਰਣ ਅਤੇ ਵਿਗਿਆਨਕ ਪੱਖ ਤੋਂ ਲਾਭ ਵੰਦ ਹੈ।" ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਇਸਤੇ ਵਿਚਾਰ ਕਰਨ ਦਾ ਭਰੋਸਾ ਦਿਵਾਇਆ।

8 "ਸੁਣਿਆ ਹੈ ਕਿ ਮਹਿਕਮਾ, ਪਟਿਆਲਾ ਵਿੱਚ ਇਕ ਹੋਰ ਆਯੁਰਵੈਦਿਕ ਹਸਪਤਾਲ ਖੋਲ੍ਹ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਉਥੇ ਪਹਿਲਾ ਹੀ ਕਈ ਹਸਪਤਾਲ ਹਨ, ਇਸ ਲਈ ਇਹ ਹਸਪਤਾਲ ਲੁਧਿਆਣਾ, ਜ਼ਲੰਧਰ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ ਵਰਗੇ ਕਿਸੇ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿਚ ਖੋਲ੍ਹਿਆ ਜਾਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ।"

ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਸੈਂਟ੍ਰਲ ਕੌਂਸ਼ਲ ਦੀ ਆਗਿਆ ਅਨੁਸਾਰ ਆਯੁਰ-ਵੇਦਿਕ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਹਿਤ ਹੀ ਇਹ ਹਸਪਤਾਲ ਖ੍ਹੋਲ੍ਹਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਇਸ ਲਈ ਹੋਰ ਕਿਸੇ ਥਾਂ ਦਾ ਸਵਾਲ ਹੀ ਪੈਦਾ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ।

9 "ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਆਯੁਰਵੇਦਿਕ ਕਾਲਜਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਮੈਡੀਕਲ ਕਾਲਜਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰੀ ਆਰਥਕ ਸਹਾਇਤਾ ਮਿਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਇਸ ਮੰਗ ਨਾਲ ਸਹਿਮਤੀ ਪ੍ਰਗਟ ਕਰਦਿਆਂ ਹੋਇਆ ਸਲਾਹ ਦਿਤੀ ਕਿ ਇਸ ਯਤਨ ਲਈ ਸੰਮੇਲਨ ਮੰਤ੍ਰੀਆਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦੇ ਯਤਨ ਕਰੇ।

10 "ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਬਹੁਤ ਵਾਰ ਸਿਹਤ ਮੰਤ੍ਰੀ ਅਤੇ ਸੰਬੰਧਿਤ ਮਹਿਕਮੇ ਦੇ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਮਿਲਿਆ ਹੈ ਅਨੇਕਾਂ ਮੈਮੋਰੰਡਮ ਭੇਜੇ ਗਏ ਪਰ ਮਹਿਕਮੇ ਨੇ ਕਦੀ ਵੀ ਕਿਸੇ ਦਾ ਕੋਈ ਲਿਖਤੀ ਉਤਰ ਨਹੀਂ ਦਿਤਾ।" ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਆਖਿਆ ਕਿ ਅੱਗੇ ਤੋਂ ਇਸ ਦਾ ਧਿਆਨ ਰਖਿਆ ਜਾਵੇਗਾ।

11 ਆਯੁਰਵੇਦਿਕ ਅਧਿਕਾਰੀਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇ ਕਿ ਉਹ ਰਚਨਾਤਮਕ ਕੰਮਾ ਵਿੱਚ ਜੀਅ ਲਾਉਣ ਜਿਸ ਨਾਲ ਵਿਗਿਆਨ ਤਰੱਕੀ ਕਰੇ ਅਤੇ ਸਰਕਾਰੀ ਪੈਸੇ ਦੀ ਵੀ ਠੀਕ ਵਰਤੋਂ ਹੋਵੇ।"

ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ਸਕੱਤਰ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਸਰਕਾਰੀ ਮਸ਼ੀਨਰੀ ਅਤੇ ਧਨ ਦੀ ਹੋਈ ਵਰਤੋਂ ਦਾ ਪ੍ਰਤੱਖ ਪ੍ਰਮਾਣ ਵੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੂੰ ਪੇਸ਼ ਕੀਤਾ ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਨੇ ਉਸ ਦਾ ਲਿਖਤੀ ਰੂਪ ਅਤੇ ਇਹ ਸ਼ਕਾਇਤ ਵੱਖਰੀ ਭੇਜਣ ਲਈ ਕਿਹਾ ਅਤੇ ਐਕਸ਼ਨ ਲੈਣ ਦਾ ਭਰੋਸਾ ਵੀ ਦਿਤਾ।

ਅੰਤ ਵਿੱਚ ਸ੍ਰੀ ਤੀਰਥ ਰਾਮ ਜੀ ਵੈਦ (ਪ੍ਰਧਾਨ ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ) ਨੇ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਅਤੇ ਹਮਦਰਦੀ ਲਈ ਹਾਰਦਿਕ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ।

ਸ੍ਰੀ ਸਕੱਤਰ (ਬੇਣੀ ਪ੍ਰਸਾਦ ਜੀ ਸ਼ਾਸਤ੍ਰੀ) ਜੀ ਤੋਂ ਪੁੱਛਣ ਤੇ ਪਤਾ ਲੱਗਾ ਕਿ ਉਹ ਕਿਸੇ ਵੀ ਆਯੁਰਵੇਦਿਕ ਅਧਿਕਾਰੀ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਵਧਾਉਣ ਲਈ ਤਿਆਰ ਨਹੀਂ ਹਨ। ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵੈਦ ਨੂੰ ਹਾਨੀ ਪਹੁੰਚਾਉਣ ਦੇ ਹੱਕ ਵਿੱਚ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਪਰ ਚੇਤਾਵਨੀ ਦੇਣਾ ਆਪਣਾ ਫਰਜ ਸਮਝਦਾ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਬਜਾਜ ਸਾਹਿਬ ਤੋਂ ਵਿਦਾਇਗੀ ਲੈ ਕੇ ਸਰਕਾਰੀ ਵੈਦ ਅਤੇ ਹਕੀਮਾਂ ਦੇ ਵੇਤਨ-ਮਾਨ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਲਈ ਵੱਖੋ ਵੱਖ ਰਾਜਨੀਤਕ ਮੁਖੀਆਂ ਨੂੰ ਮਿਲੇ। ਆਪਣਾ ਪੱਖ ਸਮਝਾਇਆ ਕਿ ਸਾਡਾ ਵੇਤਨ-ਮਾਨ, ਸੁਖ-ਸਹੂਲਤਾਂ, ਸਨਮਾਨ, ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ (ਐਲੋਪੈਥਿਕ) ਡਾਕਟਰਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਤੋਂ ਭਰੋਸੇ ਦਾ ਹੁੰਗਾਰਾ ਲੈ ਕੇ ਲੁਧਿਆਣਾ ਨੂੰ ਵਾਪਸ ਪਰਤੇ।

ਇਸ ਅਵਸਰ ਤੇ ਟੈਕਸੀ, ਭੋਜਨ, ਜਲਪਾਨ ਤੇ ਜੋ ਵੀ ਖਰਚ ਹੋਇਆ ਉਹ ਡਾ. ਵੇਦ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਜੀ ਲੇਖੀ (ਮੈਂਬਰ ਆਯੁਰਵੇਦਿਕ ਬੋਰਡ) ਨੇ ਆਪਣੇ ਕੋਲੋਂ ਦਿੱਤਾ।

—o—

ਨਜ਼ਲਾ

ਸ੍ਰੀ ਯੋਗੇਸ਼ ਮੰਜਾਲ, ਲੁਧਿਆਣਾ

ਅਨਜਾਣ ਆਦਮੀ ਦੁਆਰਾ ਚਰਕ ਚਰਚਾ ਜਿਹੀ ਆਯੁਰਵੇਦਿਕ ਦੀ ਸੰਮਾਨਿਤ ਪਤਰਕਾ ਵਿਚ ਲੇਖ ਲਿਖਣਾ ਧਿਰਕਾਰ ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਹੋਰ ਕੀ ਹੈ ? ਪਰ ਧਿਰਕਾਰ ਮੇਰਾ ਸੁਭਾਅ ਨਹੀਂ ਢੀਠਤਾ ਹੈ। ਮੈਂ ਵੈਦ ਨਹੀਂ ਹਾਂ। ਸਿਖਿਆ ਤੋਂ ਇੰਜੀਨੀਅਰ ਹਾਂ, ਕੰਮ ਕਾਜ ਤੋਂ ਇੰਡਸਟ੍ਰੀਅਲ ਸਾ ੱਾਂ। ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਕੋਈ ਹੋਰ ਵੀ ਵੈਦ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਮੇਰੇ ਸਾਰੇ ਸੱਕੇ ਰਿਸ਼ਤੇਦਾਰ ਹੀਰੋ ਸਾਈਕਲ ਬਨਾਉਂਦੇ ਹਨ। ਰੋਗੀ ਦਾ ਜਿਤਨਾ ਸਬੰਧ ਹੋ ਸਕਦਾ ਹੈ ਵੈਦ ਨਾਲ ਬਸ ਉਤਨਾ ਹੀ ਸਾਡੇ ਪਰਿਵਾਰ ਦਾ ਆਯੁਰਵੈਦਿਕ ਨਾਲ ਹੈ। ਪੜਨਾ, ਲਿਖਣਾ ਮੇਰੀ ਕਮਜ਼ੋਰੀ ਹੈ । ਅਨੇਕਾਂ ਹੋਰਾਂ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਸਾਹਿਤਕ ਰੁਚੀ ਵੀ ਹੈ ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਅਨੇਕਾਂ ਪੁਸਤਕਾਂ ਪਤਰਕਾਵਾਂ ਪੜ੍ਹਦਾ ਹਾਂ। ਇਹ ਯਤਨ ਵੈਦ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਨਹੀਂ ਬਲਕਿ ਸਵਸਥ ਰਹਿਣ ਦੀ ਕਾਮਨਾ ਤੋਂ ਭਰਪੂਰ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਕਰਦਾ ਹਾਂ

ਕਵੀਰਾਜ ਬੈਣੀ ਪ੍ਰਸਾਦ ਜੀ ਸ਼ਾਸ਼ਤਰੀ ਦਾ ਚਕਿਤਸਕ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸਾਡੇ ਪਰਿਵਾਰ ਵਿਚ ਆਉਣਾ ਜਾਣਾ ਹੈ । ਉਹ ਜਦੋਂ ਵੀ ਘਰ ਆਉਂਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਮੇਰੀ ਅਧਿਅਨ ਸਮਗਰੀ ਦੀ ਉਥਲ ਪੁਥਲ ਕਰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਸਦਾ ਹੀ ਉਪਯੋਗੀ ਅਤੇ ਗ੍ਰਹਿਣੀਅ ਸਾਮਗਰੀ ਨੂੰ ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਪਤਰ ਪਤਰਕਾਵਾਂ ਤੋਂ ਸੰਗ੍ਰਹਿਕਰ ਕੇ ਸਰਵ ਜਨ ਹਿਤਾਂ ਲਈ ਲਿਖਣ ਦੀ ਸਲਾਹ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਮੈਂ ਸਦਾ ਇਸ ਗਲ ਨੂੰ ਮਜ਼ਾਕ ਵਿਚ ਟਾਲਦਾ ਰਿਹਾ ਹਾਂ ਪਰ ਟਾਲਣ ਦੀ ਵੀ ਕੋਈ ਸੀਮਾ ਹੈ। ਸ੍ਰੀ ਕਵੀ ਰਾਜ ਦਾ ਹੌਸਲਾ ਬਹੁਤ ਹੈ ਇਸ ਲਈ ਉਨਾਂ ਸਾਹਮਣੇ ਮੈਂ ਹਾਰ ਗਿਆ ਅਤੇ ਇਹ ਛੋਟਾ ਜਿਹਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਤੁਹਾਡੇ ਸਾਹਮਣੇ ਪੇਸ਼ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ

ਨਜ਼ਲਾ ਬਹੁਤ ਭਿਅੰਕਰ ਰੋਗ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਇਸਦੇ ਹਟਾਉਣ ਲਈ ਬੜੇ ਚਕਿਤਸਕ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ਪੈਂਦੀ ਪਰ ਇਹ ਰੋਗ ਹੁੰਦਾ ਬਹੁਤ ਵਡੀ ਮਾਤਰਾ ਵਿਚ ਹੈ। ਛੋਟੇ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਬਿਰਧ ਆਦਮੀ ਤਕ ਸਭ ਨੂੰ ਆ ਘੇਰਦਾ ਹੈ। ਕੋਈ ਵਡਾ ਨੁਕਸਾਨ ਤਾਂ ਨਹੀਂ ਪੁਚਾਉਂਦਾ ਪਰ ਪ੍ਰੇਸ਼ਾਨ ਬਹੁਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਕੰਮਕਾਜ ਵਿਚ ਖਰੀ ਖਾਸੀ ਦਿਕੱਤ ਖੜੀ ਕਰ ਦਿੰਦਾ ਹੈ। ਹਰੇਕ ਚਕਿਤਸਾ ਪ੍ਰਣਾਲੀ ਵਿਚ ਇਸਦੇ ਹਟਾਉਣ ਦੇ ਕੁਝ ਉਪਾਅ ਵੀ ਹਨ । ਸ੍ਰੀ ਬੇਣੀ ਪ੍ਰਸ਼ਾਦ ਜੀ ਅਕਸਰ ਕਿਹਾ ਕਰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਜੇ ਦਵਾਈ ਨਾ ਕਰੋਗੇ ਨਜ਼ਲਾ ਸਤ ਅਠ ਦਿਨ ਤੁਧ ਲਵੇਗਾ ਅਤੇ ਜੇ ਦਵਾਈ ਕਰ ਲੈਣਗੇ ਤਾਂ ਇਕ ਹਫਤੇ ਵਿਚ ਹੀ ਰੋਗ ਤੋਂ ਮੁਕਤੀ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ। ਰੋਗ ਸ਼ਾਂਤੀ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾਲ ਕਦੀ ਕਦੀ ਦਵਾਈਆਂ ਦੀ ਪ੍ਰਤੀਕ੍ਰਿਆ ਵੀ ਦੁਖਦਾਖਿਕ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਜੋ ਪ੍ਰਯੋਗ ਮੈਂ ਤੁਹਾਡੇ ਸਾਹਮਣੇ ਪੇਸ਼ ਕਰਨ ਲਗਾ ਹਾਂ ਇਸਦੀ ਕੋਈ ਪ੍ਰਤੀਕ੍ਰਿਆ ਨਹੀਂ ਹੈ ਅਤੇ ਹਰੇਕ ਵਿਅਕਤੀ ਦੀ ਪਹੁੰਚ ਵਿਚ ਵੀ ਹੈ। ਪ੍ਰਯੋਗ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਹੈ 200 ਗ੍ਰਾਮ ਦੁਧ ਵਿਚ ਅਧਾ ਚਮਚ ਸੋਢਾ ਬਾਈ ਕਾਰਬ ਅਤੇ ਚਮਚ ਸ਼ਹਿਦ ਮਿਲਾ ਕੇ ਪਿਲਾ ਦਿਓ ਅਤੇ ਮੂੰਹ ਸਿਰ ਢਕ ਕੇ ਸੌਂ ਜਾਓ, ਥੋੜੀ ਦੇਰ ਵਿਚ ਪਸੀਨਾ ਆ ਕੇ ਸਰੀਰ ਹਲਕਾ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਹ ਪ੍ਰਯੋਗ 2-3 ਦਿਨ ਸਵੇਰੇ ਸ਼ਾਮ ਦੋਵੇਂ ਸਮੇਂ ਕਰਕੇ ਨਜ਼ਲੇ ਤੋਂ ਛੁਟਕਾਰਾ ਪਾਓ। ਇਸ ਲਈ ਮੈਂ ਉਸ ਅਣਜਾਨ ਚਕਿਤਸਕ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦੀ ਹਾਂ ਜਿਸਨੇ ਇਹ ਸਰਲ ਪ੍ਰਯੋਗ ਸੁਝਾ ਦੇਕੇ ਮਨੁਖੀ ਸਮਾਜ ਤੇ ਭਾਰੀ ਉਪਕਾਰ ਕੀਤਾ ਹੈ।

ਚੇਤਾਵਨੀ

1. ਅਨਰਜਿਸਟਰਡ ਵੈਦ ਅਤੇ ਹਕੀਮਾਂ ਨੂੰ ਤੁਰਤ ਰਜਿਸਟਰ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇ।
2. ਸਰਕਾਰੀ ਵੈਦ ਅਤੇ ਹਕੀਮਾਂ ਨੂੰ ਐਲਪੈਥਿਕ ਡਾਕਟਰਾਂ ਨਾਲ ਬਰਾਬਰ ਤਨਖਾਹ ਅਤੇ ਹੋਰ ਸਹੂਲਤਾਂ ਦਿਤੀਆਂ ਜਾਣ।
3. ਡ੍ਰਗ ਵਿਭਾਗ ਦੇ ਛਾਪੇ ਤੁਰੰਤ ਬੰਦ ਕੀਤੇ ਜਾਣ।
4. ਆਯੁਰਵੈਦਿਕ ਕਾਲਜਾਂ ਨੂੰ ਮੈਡੀਕਲ ਕਾਰਜਾਂ ਦੇ ਬਰਾਬਰ [illegible] ਸਹਾਇਤਾ ਦਿਤੀ ਜਾਵੇ।
5. ਆਯੁਰਵੈਦਿਕ ਫਾਰਮੇਸੀਆਂ ਨੂੰ ਸਹਾਰਾ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇ। ਜੇ ਸਰਕਾਰ ਇਨਾਂ ਉਚਿਤ ਮੰਗਾਂ ਵਲ ਤੁਰੰਤ ਧਿਆਨ ਨਾ ਦਿਤਾ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ ਨੂੰ ਸੰਘਰਸ਼ ਦਾ ਰਾਹ ਅਪਨਾਉਣ ਲਈ ਮਜਬੂਰ ਹੋਣਾ ਪਵੇਗਾ।

ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਚਲੋ।

ਆਪਣੀਆ ਠੀਕ ਤੇ ਜਾਇਜ਼ ਮੰਗਾਂ ਮੰਨਵਾਉਣ ਲਈ ਇਕ ਦਿਨ ਦਾ ਸਮਾਂ ਕਢੋ ਤੇ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਮੁੱਖ ਮੰਤ੍ਰੀ ਦੀ ਕੋਠੀ ਤੇ ਧਰਨਾ ਮਾਰਨ ਲਈ ਚਲੋ।

ਆਯੁਰਵੈਦਿਕ ਸਾਇੰਸ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਲਈ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਚਲੋ

ਦੁੱਖੀ ਜਨਤਾ ਦੀ ਭਲਾਈ ਲਈ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਚਲੋ।

ਵੈਦ ਹਕੀਮਾਂ ਦੇ ਸਨਮਾਨ ਦੀ ਰਖਿਆਂ ਲਈ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਚਲੋ।

ਇਹ ਖਬਰ ਆਪਣੇ ਆਲੇ ਦੁਆਲੇ ਦੇ ਅਤੇ ਵਾਕਫ ਵੈਦਾਂ ਦੇ ਗਿਆਨ ਵਿਚ ਲਿਆਓ ਤੇ ਆਪਣਾ ਤੇ ਉਨਾਂ ਦਾ ਨਾਮ ਪੂਰਾ ਪਤਾ ਦਫਤਰ ਭੇਜੋ

ਪੰਜਾਬ ਵੈਦ ਸੰਮੇਲਨ

ਕਰਤਾ ਰਾਮ ਸਟ੍ਰੀਟ, ਲੁਧਿਆਣਾ

प्रकाशक :

कविराज वेणी प्रसाद शास्त्री एम.ए.

महामन्त्री—पंजाब वैद्य सम्मेलन

कर्तारराम स्ट्रीट, लुधियाना

फोन : 21654

संरक्षक :

डा० वेदप्रकाश जी लेखी, लुधियाना

श्री वेद प्रकाश जी अग्रवाल रंग वाले, लुधियाना

श्री. वेद प्रकाश जी, लुधियाना

डा. वेद प्रकाश जी वोहरा, लुधियाना

वैद्य श्याम लाल जी जगराओं

श्री पन्ना लाल जी जैन, लुधियाना

लाला जानकी दास जी जैन, लुधियाना

डा० चन्द्र प्रकाश जी वर्मा बी.डी.एस., लुधियाना

श्री खुशीराम जी हलवाई, लुधियाना

श्री जुगल किशोर जी तिवारी, लुधियाना

श्रीमती पुष्पा देवी C/o श्री देवराज जी रंग वाले, लुधियाना

डा० कृष्ण स्वरूप जी एम.बी.बी.एस., लुधियाना

श्री राज कुमार जी सोनी, लुधियाना

श्रीमती नीना, अमीता, वन्दना C/o चौ. वेदप्रकाश जी, लुधियाना

लाला तीर्थराम जी जिन्दल, लुधियाना

श्री मदन मोहन जी, व्यास, लुधियाना

डा० हरि शर्मा जी, अहमदगढ़ मण्डी

डा० खूब चन्द जी अहमदगढ़ मण्डी

श्री लक्ष्मण पुरी जी महाराज, जीरा

कविराज तीर्थराम जी वैद्य मोगा, प्रधान पंजाब वैद्य सम्मेलन

श्री विजय कुमार जी वैद्य खन्ना

श्री वैद्यराज सत्यपाल जी मित्तल जगराओं

आप हैं हमारे संरक्षक जिनके उदारतापूर्ण आर्थिक सहयोग से चरक चर्चा के प्रकाशन का स्वप्न साकार हो सका है।

Printed at

ATAM JAIN PRINTING PRESS
350, Industrial Area A, Ludhiana
Phone : 28797
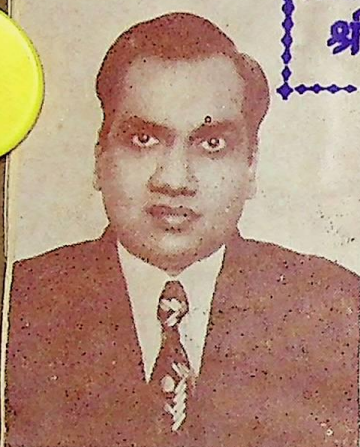
श्री योगेश कुमार जी मुंजाल
राकमैन साईकल इण्डस्ट्रीज
लुधियाना
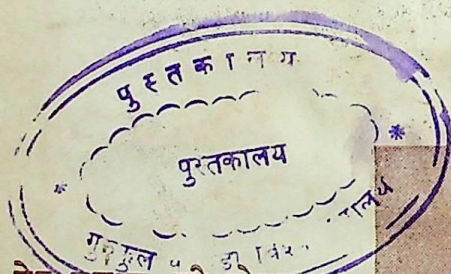
डा० वेद प्रकाश जी वोहरा
प्रधान पंजाब वैद्य सम्मेलन
लुधियाना ब्रांच
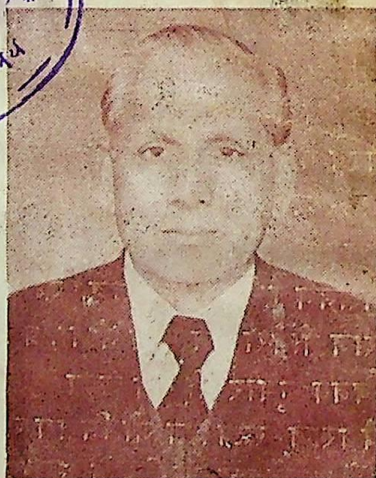
इस ग्रन्थ के कागज का व्यय भार
आपने वहन किया है।